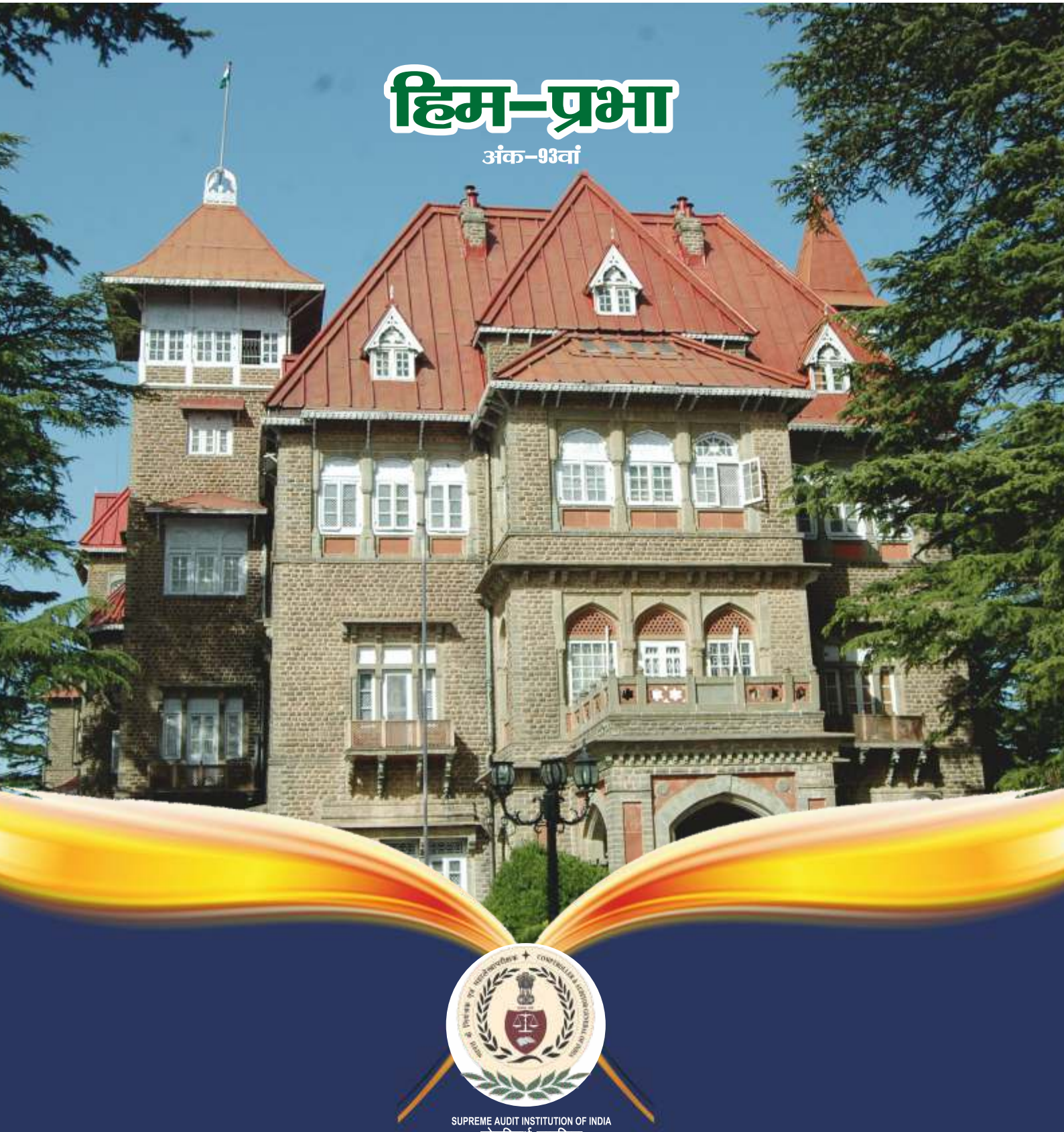

हिम-प्रभा

अंक-93वां

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated toTruth in Public Interest

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171003

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171003

हिंदी पखवाड़ा 2023 के प्रथम दिवस की कुछ झलकियां

संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "हिम–प्रभा'' के 93 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता एवं मेलजोल की भाषा है। राजभाषा अत्यंत सरल, सहज एवं सुबोध है, जिसे साधारण मनुष्य द्वारा सरलता से बोला, समझा, पढ़ा और लिखा जा सकता है।

हिंदी भाषा विभिन्न धर्म, जाति और प्रदेश की सीमाओं को पार कर, हमें एक दूसरे के साथ संवाद स्थापित करने की क्षमता प्रदान करती है। यह हमें एक दूसरे की संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को समझने में सहायक होती है और इस प्रकार राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देती है।

रचनाकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों पर आधारित अत्यंत रुचिकर, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक रचनाएं प्रेषित कर इस अंक को प्रभावशाली बनाया है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल और सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

सुशील कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
एवं मुख्य संरक्षक ''हिम–प्रभा''

संदेश

संयुक्त हिन्दी पत्रिका ''हिम-प्रभा'' का नवीन अंक आपके समक्ष लाना एक सुखद अनुभूति है। हम साक्षी हैं कि देश ने न सिर्फ औद्योगिक, प्रौद्योगिक और बौद्धिक विकास में उन्नति की है, अपितु 'जी-20' में 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सूत्र को सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख प्रस्तुत कर एक नए भारत का सूत्रपात भी किया है। एक सुदृढ़ राष्ट्र के लिए एक सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं होता और राजभाषा हिन्दी इस कसौटी पर खरी उतरती है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार को हमें राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

यह संयुक्त हिन्दी पत्रिका ''हिम-प्रभा'' का 93वां अंक है। हिम-प्रभा हमारे विभाग के सृजनात्मक और रचनात्मक विकास को प्रतिबिंबित करती है साथ ही हिन्दी भाषा के प्रति रुझान भी बढ़ाती है।

कार्यालय में राजभाषा का सहज वातावरण निर्मित करने, कर्तव्यों के साथ-साथ कलात्मकता और रचनात्मकता को उड़ान देने में हिम-प्रभा सफल रही है। हिम-प्रभा की सफलता में कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों तथा संपादक मण्डल का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन में लेखन सामग्री एवं प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करती हूं कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

चंदा मधुकर पंडित
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं संरक्षक ''हिम-प्रभा''

संदेश

प्रधान संपादक की कलम से.....

कार्यालय की लोकप्रिय पत्रिका 'हिम-प्रभा' के 93वें अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष की अनुभूति हो रही है। इसके लिए संपादक-मण्डल सहित समस्त रचनाकार एवं सहयोगीगण बधाई के पात्र हैं, जिनके सार्थक एवं सहकारी प्रयासों से ही पत्रिका के रूपायन को एक नया आयाम प्राप्त हुआ है। पत्रिका दोनों कार्यालयों के कार्मिकों को कार्यालयीन गतिविधियों से इतर उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक लेखन प्रतिभा को हिन्दी में अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है और उनके सृजनात्मक कौशल एवं रचनाधर्मिता की एक मानक कसौटी सिद्ध होती है, जिसकी अपेक्षाओं के अनुरूप वे बेहद खरे उतरते है। इस प्रकार पत्रिका न केवल कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों एवं क्षमताओं को दस्तावेजी स्वरूप में संजोकर प्रस्तुत करती है बल्कि राजभाषा हिन्दी के सतत उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति में भी अपना अहम् योगदान प्रदर्शित करती है।

मैं संपादक मण्डल सहित समस्त सहयोगीगणों को पुनः साधुवाद देता हूं और आशा करता हूं कि सभी कार्मिक राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठावान रहेंगे और अपने कार्यों में हिन्दी भाषा के शत-प्रतिशत प्रयोग को सुनिश्चित करेंगे।

रवि कुमार
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संदेश

"हिम–प्रभा" का 93 वाँ अंक सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। मुझे हर्ष है कि दोनों कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से राजभाषा हिन्दी में विभागीय पत्रिका "हिम–प्रभा" का प्रकाशन किया गया है। हिन्दी भाषा देश की अनेक क्षेत्रीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने के लिए कार्यरत है। हम सभी को सरल एवं सहज हिन्दी को दैनिक तथा कार्यालयीन कार्य में अपना कर राजभाषा हिन्दी की प्रगति में और अधिक सहयोग करना चाहिए जिससे कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति औऱ निरंतरता को बनाए रखने के उद्देश्य की सार्थकता सिद्ध होगी।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार व भारत सरकार के द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु दोनों कार्यालयों के विभिन्न अनुभाग पूरे वर्ष भरसक प्रयत्न करते हैं। इसके अलावा हिंदी में किए गये कार्यों का निरीक्षण, हिंदी कार्यशाला का आयोजन तथा कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

"हिम–प्रभा" राजभाषा सम्बन्धी ज्ञान को बढ़ाने के साथ–साथ कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के सृजनात्मक चिंतन को भी सक्रिय करने का कार्य करती है। पत्रिका के 93 वें अंक के प्रकाशन पर मैं सम्पादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

अभिषेक कुमार
उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

संपादक-मण्डल

मुख्य संरक्षक	श्री सुशील कुमार प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
संरक्षक	श्रीमती चंदा मधुकर पंडित प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
प्रधान संपादक	श्री रवि कुमार वर्मा उप-महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
संपादक	श्री अभिषेक कुमार उप-महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
सलाहकार संपादक	श्री पवन कुमार वरिष्ठ लेखा अधिकारी (लेखा व हकदारी)
	श्रीमती अनुराधा सूद वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (लेखापरीक्षा)
	श्रीमती सूरज नेगी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (लेखापरीक्षा)
	श्रीमती सीमा सहोता सहायक लेखा अधिकारी (लेखा व हकदारी)
सहायक संपादक	श्री सोम नाथ सोनी सहायक पर्यवेक्षक (लेखा व हकदारी)
	सुश्री समता खानचंदानी कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (लेखापरीक्षा)
	सुश्री श्रुति कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (लेखा व हकदारी)

प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं।

सम्पादक मण्डल का रचनाओं के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1	महाभारत के युद्ध के बाद	श्री सुशील कुमार	1-5
2	माता वैष्णो देवी मंदिर यात्रा-वृत्तांत	सुश्री अनुराधा सूद	6-11
3	छाया चित्र		12-13
4	परमार्थ का प्रतिफल	श्री पवन कुमार	14-18
5	आखेट	सुश्री समता खानचंदानी	19
6	हँसना जीवन का आनंद	श्री दिनेश कुमार शर्मा	20
7	काश बदल जाए ये हिंदुस्तान	श्री प्रभात कुमार	21
8	भारतीय मतदान महोत्सव	श्री दया सागर	22-24
9	किन्नौर दर्शन	सुश्री सूरज नेगी	25-27
10	माता पिता के कर्ज को चुकाऊँ कैसे ?	सुश्री सोनिया शर्मा	28
11	जी-20 सम्मेलन	श्री प्रभात कुमार	29-33
12	छाया चित्र		34-35
13	आत्मनिर्भर भारत और पैसा	श्री दया सागर	36-37
14	आँगन	सुश्री श्रुति	38
15	बालगीत	श्री सुनील कुमार	39
16	घुटनों के दर्द व आगामी शल्य-चिकित्सा तक की वेदना यात्रा	सुश्री सीमा सहोता	40-41
17	मन भर आया	सुश्री सुनीता देवी	42
18	जिन खोजा तिन पाया	श्री पवन कुमार	43-44
19	हिन्दी किस्सा-गोई	सुश्री समता खानचंदानी	45-47
20	दूसरों से प्रेम करें व खुद से भी	श्री सोमनाथ सोनी	48
21	समय की पुकार	श्री एच. आर. जसपाल	49-50
22	प्रकृति का नियमः शून्यता	श्री विनय	51-52
23	आऊँगी	सुश्री श्रुति	53
24	रू-ब-रू व उम्मीद	सुश्री शालू	54
25	नारी शक्ति	सुश्री सोनिया शर्मा	55
26	शुक्र करता चल, शुक्र करता चल	सुश्री अनुराधा सूद	56
27	कुछ खट्टी-मीठी बातें	श्री अंकुर बहल	57

महाभारत के युद्ध के बाद

सुशील कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

मेरे बचपन में हमारा गाँव एक अनूठा गाँव हुआ करता था । अनूठा इसलिए क्योंकि आस पास के गाँवों में अधिकतर कृषक ही वास करते थे,जबकि हमारे गाँव में कृषि के अलावा विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करने वाले लोग जैसे सुनार, लोहार, तेली, मोची, मिस्त्री, दर्जी, कसाई आदि बसते थे । गर्मियों में तो एक कुम्हार भी आता था जो पास के वन से चिकनी मिट्टी खोद कर अपनी चाक की मदद से घड़े, गमले, आदि बनता था। इस तरह हमारा गाँव एक सर्विस सेण्टर की तरह था और इस लिए खूब चहल-पहल रहती थी। मुझे तरह-तरह के व्यवसाय में लगे व्यक्तियों को अपना -अपना काम करते हुए देखने में बहुत आनंद आता था ।

उस समय आज कल की मनोरंजन की सुविधाएं नहीं होती थी। आधुनिक मनोरंजन के नाम पर रेडियो मात्र हुआ करते थे, जो गाँव के कुछ गिने चुने लोगों के पास होते थे। उन में से एक दर्जी भी था, जिस के पास बैठ कर घंटों मैं फिल्मी गाने, समाचार आदि सुनता था या फिर गाँव में जब मेला लगता था तो कभी कभार पब्लिसिटी डिपार्टमेंट वाले कोई सिनेमा दिखा देते थे। हम बच्चे स्कूल के बाद अन्य घरेलु कार्यों को निपटाने के पश्चात् शाम के समय गाँव के बीच के पेड़ के नीचे देर रात तक खेलते थे। कभी कभी गाँव के बुजुर्ग अपने जीवन की कुछ छोटी मोटी घटनायें या फिर कोई कहानी सुना दिया करते थे जिन्हें हम सब ध्यान से सुनते थे। मैट्रिक की शिक्षा पूरी करने के पश्चात् मुझे आगे की पढाई के लिए और फिर नौकरी के लिए अपना गाँव छोड़ना पड़ा। समय के साथ उन लोगों के द्वारा सुनाई गयी लगभग सारी घटनायें व कहानियां धुंधली होती गयी, सिवाए एक कहानी के, जो बहुत दिलचस्प थी जिसे मैं कभी भूल न पाया। वो कहानी थी श्री कृष्ण जी के बारे में। उस कहानी के कुछ प्रसंग तो इतने रोमांचित करने वाले थे कि उन पर यकीन करना भी मुश्किल होता था। कभी-कभी तो मुझे लगता था कि कहीं वो कहानी उन बुजुर्गों के दिमाग की कोरी उपज तो नहीं थी। फिर एक दिन मुझे खयाल आया कि क्यों न उस कहानी की सत्यता को इन्टरनेट के माध्यम से जांच लिया जाए। जैसे ही मैंने गूगल पर उस कहानी का विषय डाल कर सर्च किया, तो आश्चर्य चकित रह गया। उन बुजुर्गों द्वारा सुनाई गयी कहानी एकदम सच्ची थी। मुझे यह जान कर हैरानी होती है कि किस तरह छोटे से गाँव में रहने वाले लोग अपनी संस्कृति को संजो कर अपने भावी

पीढ़ी को सौंप देते थे। मुझे यकीन है कि आप में से बहुत से लोगों ने यह कहानी सुनी, पढ़ी या फिर टेलीविजन पर देखी होगी। फिर भी मैं इस कहानी को दोहराना चाहता हूँ क्योंकि यह बहुत ही मनोरंजक, रहस्यमयी और शिक्षा देने वाली कहानी है। इस कहानी को मैंने अपने गाँव में उन बुजुर्गों द्वारा सुनाई गयी कहानी तथा इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर संकलित किया है ।

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। कुरुक्षेत्र की भूमि में अनगिनत योद्धाओं के रक्त समा जाने के कारण, मिट्टी का भी रंग बदल गया था। अब रण भूमि की निर्जरता दिल को दहलाने वाली थी। आप ने महसूस किया होगा कि घर में या गाँव में कोई समारोह समाप्त होने के बाद के सूनेपन से मन कितना व्यथित हो जाता है। पर यहाँ तो महाभारत के लम्बे युद्ध की गहमा-गहमी और असंख्य लोगों की भांति-भांति के चीख पुकार के पश्चात् सब कुछ शांत हो गया था। सब लोग डरे व सहमे से दिख रहे थे और दबी जुबान में बातें कर रहे थे। इस सूनेपन का आंकलन करना या शब्दों में उल्लेख करना लगभग नामुमकिन था। फिर युद्ध के परिणाम से कोई भी प्रसन्न नहीं था - न ही हारने वाले और न ही जीतने वाले।

जब श्री कृष्ण और पांडव बन्धु गांधारी और धृतराष्ट्र से मिलने के लिए गए, तो गांधारी मानो आंसुओं के तालाब में डूबी हुई थी। अपने पुत्रों के खो जाने के कारण वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठी थी। पास ही धृतराष्ट्र लाचार सा खड़ा था। गांधारी ने युद्ध को टालने के लिए श्री कृष्ण से आग्रह भी किया था और उसे पूर्ण विश्वास था कि युद्ध किसी तरह टल जायेगा। उसे लग रहा था कि श्री कृष्ण ने सब कुछ जानते हुए भी, युद्ध को नहीं रोका था। इसी लाचारी और क्रोध के कारण वह अपना विवेक खो बैठी थी। वह श्री कृष्ण को बुरा भला कहने लगी और भगवान श्री कृष्ण भी सिर झुकाए सब कुछ सुन रहे थे। क्रोध की आंधी में अंधी हुई गांधारी ने श्री कृष्ण से कहा, ''हे विष्णु अवतार, तुम चाहते तो युद्ध को टाल सकते थे, मैं प्रति-दिन तुम से इस युद्ध को रोकने के लिए प्रार्थना करती रही और तुम ने मेरी हर प्रार्थना को अनसुना कर दिया। काश तुम ने अपनी माँ से पूछा होता कि अपने बच्चों को खोने की पीड़ा क्या होती है। उस ने तो सिर्फ सात नवजात बच्चे खोये थे, पर मैंने तो उस युद्ध में सौ जवान पुत्र खोये हैं, जिस युद्ध को अगर तुम चाहते तो रोक सकते थे।'' तब वह घड़ी भी आ गयी, जिस के बारे में श्री कृष्ण पहले से ही जानते थे। अगर भगवान विष्णु के प्रति मेरी श्रद्धा सच्ची है तो मैं तुम्हे श्राप देती हूँ कि ''जिस तरह मेरे पुत्र युद्ध-भूमि में शस्त्रों से मारे गए, तुम्हारी मौत भी शस्त्र से ही हो। तुम्हारी द्वारका समुद्र में विलीन हो जाये और यदु वंश का नाश भी उसी तरह से हो, जैसे तुम ने कुरु वंश के लोगों को एक दूसरे का नाश करने के लिए विवश किया।'' गांधारी आग बबूला होते हुए कह बैठी। मगर उसे शीघ्र ही अपनी अनुचित व्यवहार का एहसास हो गया और वह श्री कृष्ण के पाँव में जा गिरी और विलख-विलख कर रोने लगी। श्री कृष्ण ने गांधारी को दोनों हाथों से उठाया और मुस्कुराते हुए कहा,''इस पृथ्वी पर मेरे सिवा, यदु वंशियों का नाश करने में सक्षम कोई नहीं है। मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ तथा मुझे ही यह करना होगा। आप ने मुझे यह श्राप दे कर इस कार्य को सम्पूर्ण करने में अपना बहुमूल्य

योगदान दिया है।'' श्री कृष्ण जानते थे अंततः हर परिस्थिति में वस्तु को परिवर्तित होना ही है। उनके संरक्षण में यादव इतने शक्तिशाली हो गए थे कि उन्हें कोई भी हरा नहीं सकता था। भगवान श्री कृष्ण ने गांधारी से कहा कि यही प्रकृति का नियम है कि आज जो यहाँ है कल नहीं होगा, और उनका श्राप तो इस परिवर्तन को फलीभूत करने हेतु एक बहाना मात्र है ।

युद्ध की समाप्ति पर श्री कृष्ण कुछ दिनों हस्तिनापुर रहने के उपरांत द्वारका चले गए और वहां उन्होंने राजपाठ संभाल लिया। कहा जाता है कि उन्होंने द्वारका में लोक कल्याण के लिए दिन रात अथक प्रयास किये। इसी सुशासन के परिणाम स्वरूप समाज में चारों तरफ सुख और समृद्धि छाई थी।

उनकी प्रजा जीवन यापन के लिए जद्दो-जहद करना भूल चुकी थी और इस का उन पर विपरीत असर पड़ रहा था। वे धीरे-धीरे कई तरह की बुराइयों से ग्रस्त होने लगे। वे अपना अधिकतर समय मदिरा पान करने, व्यर्थ की बातें करने, जुआ खेलने आदि में व्यतीत करने लगे। भगवान श्री कृष्ण सब कुछ जानते हुए भी इन्हें अनदेखा कर देते ।

इस तरह कई वर्ष बीत गए और एक दिन कुछ महा ऋषि गण भगवान श्री कृष्ण के दर्शन के लिए द्वारका के द्वार पहुँच गए। पास ही में यादव बालकों की एक टोली खेल रही थी। इन्ही बच्चों में श्री कृष्ण के पुत्र संबा भी थे। बच्चों को ऋषियों की शक्ति परखने के लिए एक शरारत करने की सूझी। सब बच्चों ने मिल कर संबा को स्त्री के वस्त्र पहना दिए और उस के पेट पर कपड़े की गठरी सी बांध दी ताकि दिखने में गर्भवती स्त्री लगे। फिर उन्होंने ऋषियों के पास जा कर पूछा कि बताइए महर्षियों, कि इस स्त्री को लड़का होगा या लड़की ? ऋषियों को बच्चों के शरारत का ज्ञान पहले ही हो गया था, और बच्चों की इस उद्दंडता पर वे आग बबूला हो गए। उन में से एक ऋषि ने कहा, ''हे असभ्य बालकों, इस के पेट से न लड़का होगा न लड़की, पर जो कुछ भी पैदा होगा वह समस्त यदु वंश के नाश को सुनिश्चित करेगा।'' यह सुन कर सभी बच्चे जोर-जोर से हंसने लगे और वहां से भाग गए ।

शाम को जब संबा अपने महल लौटा, तो उसे पेट में पीड़ा होने लगी। समय के साथ पीड़ा बढ़ती गयी और उस के साथ उस के पेट में उभार सा आने लगा। श्री कृष्ण जी अपने बालक को पीड़ा में बिलखता देख बहुत अधिक विचलित हो गए। पूछने पर संबा ने उन्हें ऋषियों के साथ की गई शरारत के बारे में सब कुछ बता दिया। उन्होंने इस रहस्यमयी विपदा के निदान के लिए अपने वैद्य व अन्य विद्वानों को बुला कर उन से परामर्श किया। उन में से सब से विद्वान व्यक्ति ने कहा, ''भगवन, इस बच्चे के पेट में जो भी पल रहा है, उसे शीघ्र अति शीघ्र निकाल कर नष्ट कर देना होगा। यह निश्चित ही एक अशुभ संकेत है।'' तुरंत ही फैसला लिया गया कि शल्य चिकित्सा द्वारा संबा के पेट से उस रहस्यमयी वस्तु को निकाल दिया जाये। अतः राज वैद्य ने इस के लिए आवश्यक प्रबंध कर लिए। सब लोग उस वस्तु के बारे में जानने के लिए अत्यंत उत्सुक थे। जब राज वैद्य ने संबा के पेट को चीरने के बाद उस वस्तु को देखा तो वे भी बहुत हैरान हो गए। वह एक अज्ञात धातु

की पिंड थी। उन्होंने शीघ्र ही उसे सावधानी से पेट से निकाल दिया और सब के सामने ले आये । उसी विद्वान व्यक्ति ने सुझाव दिया कि इस पिंड को शीघ्र अति शीघ्र, जितना हो सके महीन पीस कर, उस का चूर्ण बना कर समुद्र में बहा दिया जाना चाहिए। लेकिन जब पिंड को पीसा जाने लगा तो, उस में से एक नुकीला सा टुकड़ा बच गया जिसे लाख कोशिश करने पर भी न पीसा जा सका, और अंत में थक हार कर उस धातु के टुकड़े समेत चूर्ण को समुद्र में बहा दिया गया। अब लोगों ने चैन की साँस ली और सोचने लगे चलो बला तो टल गयी । पर जब उस चूर्ण को समुद्र में बहा दिया गया तो, धातु का टुकड़ा तो डूब कर समुद्र तल में पहुँच गया और चूर्ण पानी पर तैरते-तैरते समुद्र के तट पर पहुँच गया। समय बीतता गया और एक दिन धातु के टुकड़े को एक मछली ने निगल लिया और चूर्ण धीरे-धीरे समुंदर तट पर उगे सरकंडों में रच गया जिस के परिणाम स्वरुप सरकंडे धातु समान मजबूत हो गए। नियती का खेल तो देखिये वही मछली, जिस ने उस धातु के टुकड़े को निगल लिया था, जरा नाम के शिकारी के जाल में फंस गयी। जरा को जब मछली के पेट से वह धातु का टुकड़ा मिला तो, उस ने उस टुकड़े को एक बाण की नोंक पर लगा दिया, ताकि बाण घातक बन जाये।

एक दिन यदु वंश के व्यक्ति समुंदर के तट पर नशे में बेसुध हो कर, पुरानी छोटी-मोटी बातों को ले कर आपस में झगड़ने लगे। जब झगड़ा बढ़ने लगा तो लोग समुद्र तट पर उगे सरकंडों की लाठी बना कर एक दूसरे पर बरसाने लगे। सरकंडों में चूर्ण रचने के कारण वे बहुत ही घातक बन चुकी थीं। इस झगड़े में, श्री कृष्ण के दो सारथियों के अतिरिक्त लगभग सारे यदु वंशी पुरुषों का विनाश हो गया। जब उन दोनों सारथियों ने श्री कृष्ण को इस घटना के बारे में बताया तो, श्री कृष्ण ने अपने एक सारथी को इन्द्रप्रस्थ जाने के लिए कहा और धर्मराज को उस घटना के बारे में बता कर अर्जुन को अपने साथ द्वारका ले आने के लिए कहा ।

इधर द्वारका में श्री कृष्ण जी अपने भाई बलराम जी से मिलने के लिए निकल पड़े, जो वन में एक वृक्ष के नीचे समाधि ले कर बैठे थे। श्री कृष्ण जी ने जब अपने भाई को पुकारा तो कोई जवाब नहीं मिला। वास्तव में बलराम जी अपना देह त्याग चुके थे। बलराम जी आदि शेष नाग के अवतार थे और उनकी आत्मा उनके शरीर को त्याग कर एक सर्प के रूप में आकाश मार्ग से वैकुण्ठ में भगवान विष्णु के पास पहुँच गयी थी। श्री कृष्ण जी को भी आभास हो गया कि अब उन का भी देह त्यागने का समय आ गया है। उसी समय उन्होंने दुर्वासा ऋषि के वचनों का स्मरण किया। अतीत में एक बार दुर्वासा ऋषि ने श्री कृष्ण जी को दुर्वासा ऋषि के समस्त शरीर पर 'पायसम' मलने के लिए कहा था। दुर्वासा ऋषि योग मुद्रा में खड़े हो गए और श्री कृष्ण उनके शरीर पर पायसम मलने लगे। ऋषि को इस से इतनी शांति की अनुभूति हुई कि वे गहरी निंद्रा में चले गए। श्री कृष्ण जी ने ऋषि के पांव के तलवे को छोड़ कर पूरे शरीर पर पायसम मल दिया। ऋषि के पांव के तलवे पर पायसम मलने के लिए उन्हें ऋषि के पांव को उठाना पड़ता, जिस से उन की निंद्रा भंग हो सकती थी। इस लिए वे ऋषि के पांव के तलवे पर पायसम नहीं मल सके। कुछ समय

पश्चात् जब ऋषि निंद्रा से जागे तो अपने तलवे पर पायसम न पा कर बहुत क्रोधित हो गए। क्रोध से भरे ऋषि ने श्री कृष्ण से कहा,''कृष्ण, क्योंकि तुम ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया है, अतः तुम्हारी मृत्यु तुम्हारे पांव में ही निहित रहेगी।''

श्री कृष्ण जी अब तक काफी थक चुके थे और एक पेड़ की छाँव में बैठ कर आराम करने लगे। उन्हें शीघ्र ही नींद आ गयी। उसी समय वन में जरा शिकारी शिकार करने के लिए आया था। जरा को पेड़ के नीचे एक हिरन दिखाई दिया। उसने शीघ्र ही अपने धनुष से उसी बाण को जिस के नोंक पर उस ने मछली के पेट से निकली धातु के टुकड़े को लगाया था, से हिरन पर प्रहार कर दिया। तभी एक आह की आवाज आई और जरा उस तरफ दौड़ पड़ा। दरअसल जरा ने जिसे हिरन का चेहरा समझा था वह वास्तव में श्री कृष्ण जी का पाँव था। जब जरा ने नजदीक आ कर देखा तो उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और श्री कृष्ण से क्षमा याचना करने लगा। श्री कृष्ण ने हंस कर कहा,''तुम बिलकुल भी व्यथित न हो, जरा। तुम्हारे हाथों से मेरी मृत्यु होना तो पहले से ही निश्चित था। तुम त्रेतायुग में राजा बाली थे और मैंने श्री राम के अवतार के रूप में तुम्हारा वध तुम्हारी पीठ पर तीर मार कर किया था। अतः तुम्हारे हाथों मेरी इस तरह मृत्यु होना तो मेरे अपने ही कर्मों का फल है।'' उसी क्षण श्री कृष्ण ने अपना देह त्याग दिया।

इन घटनाओं के उपरांत द्वारका की बहुत सारी स्त्रियों ने अपने पिता, पति, भाई, पुत्र आदि की मृत्यु के दुःख के कारण खाना-पीना छोड़ दिया और धीरे धीरे मृत्यु के मुंह में चले गए। अर्जुन जब द्वारका पहुंचे तो उन्होंने बचे-खुचे पुरुषों, स्त्रियों व बच्चों को अपने साथ इन्द्रप्रस्थ ले जाने का निर्णय लिया। जब वे इन्द्रप्रस्थ जा रहे थे तो रास्ते में उन पर लुटेरों ने हमला कर दिया। एक समय का नामी योद्धा अर्जुन बिलकुल शिथिल हो चुका था। उन में अपने धनुष तक को उठाने की शक्ति नहीं बची थी। उन्होंने दिव्य अस्त्रों का उपयोग करना चाहा लेकिन वे सारे मन्त्र भूल चुके थे। लुटेरों ने कई लोगों को मार दिया, कुछ लोग नदी में कूद गए और कईयों ने अपने आप को आग के हवाले कर दिया। इस तरह एकदम थका-हारा अकेला अर्जुन इन्द्रप्रस्थ पहुँच गया। श्री कृष्ण के मृत्यु के सात दिन बाद द्वारका भी समुद्र में समाने लग गयी। इन्द्रप्रथ में पांडव भ्राताओं ने भी परीक्षित का राज्याभिषेक करने के उपरांत हिमालय की ओर प्रस्थान कर दिया।

माता वैष्णो देवी मंदिर यात्रा-वृत्तांत

अनुराधा सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के जम्मू स्थित क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान में मई माह 2023 के अन्तिम सप्ताह में एक ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लेने के दौरान मुझे माता वैष्णो देवी के मंदिर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मन्दिर 108 शक्ति पीठों में से एक शक्ति-पीठ के रूप में प्रसिद्ध है तथा त्रिकुटा नामक पर्वत पर स्थित है प्रत्येक वर्ष लाखों भक्त इस पवित्र गुफा के दर्शन करने आते है। एक शाम प्रशिक्षण उपरांत, माँ वैष्णो देवी के दर्शन करने के इच्छुक, विभिन्न तीन लेखापरीक्षा कार्यालयों के हम कुल छः प्रशिक्षणार्थी, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान के सक्षम अधिकारी से यात्रा की अनुमति लेकर एक निजी बस द्वारा जम्मू से करीब 50 कि.मी. दूर स्थित कटरा के लिए रवाना हुए। कटरा शहर समुद्र तल से लगभग 2500 फीट ऊँचा है जबकि माता वैष्णो देवी जी का भवन समुद्र तल से लगभग 5200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

वैष्णो देवी जाने वाले सभी तीर्थ यात्रियों को सर्वप्रथम कटरा चौक स्थित यात्रा पंजीकरण काउंटर पर खुद को पंजीकृत करवाना अनिवार्य है, इस निःशुल्क पंजीकरण पर आपको पंजीकरण काउंटर से आरएफआईडी कार्ड मिलेगा, बाणगंगा चेक-पोस्ट में सुरक्षा जांच करने के उपरांत ही आगे यात्रा हेतु आपको जाने दिया जाता है। लोगों की संख्या को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ही इस कार्ड का प्रयोग किया जाता है। पंजीकरण करवाने के छः घंटे के भीतर आपको अपनी यात्रा आरम्भ करनी होती है। यहाँ से आपको बाण-गंगा जाने के लिए दो रास्ते मिलेंगे। नया रास्ता ताराकोट होते हुए ले जाता है, दूसरा पुराना रास्ता है इसमें आपको बाण-गंगा तक जाने के लिए ऑटो भी मिल जाएंगे। कटरा पहुँच कर हम सबने यात्रा हेतु पंजीकरण करवाया तथा आरएफआईडी कार्ड प्राप्त करने के बाद बाणगंगा तक का रास्ता हमने ऑटो द्वारा तय किया। यहाँ पहुँच कर एक दुकान से हम सबने सहारे के लिए लाठियाँ ले ली। मुझे घुटनों की समस्या होने के कारण, हमने हिमकोटी से बैटरी वाले वाहन से आगे का रास्ता तय करने का निश्चय किया तथा नींबू-पानी का आनंद लेकर हिमकोटी तक अपनी पैदल यात्रा आरम्भ की। भवन तक पहुंचने के लिए 13 कि.मी. का पैदल ट्रैक या फिर सीढ़ियां चढ़ने का वैकल्पिक मार्ग भी है। लेकिन सीढ़ियों का विकल्प केवल पूर्णतया स्वस्थ लोगों को ही लेना चाहिए। कटरा से सांझीछत तक की यात्रा के लिए हेलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है, जहां से

मंदिर का रास्ता भी ढलान वाला सिर्फ 2.5 कि.मी. दूर रह जाता है। बाणगंगा से श्रद्धालुओं के लिए पालकी, पिठ्ठू, घोड़ा और बच्चों को घुमाने वाली गाड़ी (प्रैम) जैसी अनेक सुविधायें उपलब्ध है। वैसे यात्रा का आनंद पैदल चलने में है, लगभग 5 से 6 घंटे के बीच भवन पर आराम से पहुँचा जा सकता है। यहां का स्थानीय निवासी चाहे वह किसी भी धर्म का हो, माता के प्रति अटूट श्रद्धा रखता है। अपने बचपन में दो बार पहले भी मैं, माँ वैष्णो की पवित्र गुफा के दर्शन कर चुकी हूँ तब से अब तक काफी कुछ बदल चुका है अब पूरे रास्ते को सारी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाकर सुगम बना दिया गया है, पहले माता के दर्शनों के लिए केवल एकमात्र प्राकृतिक गुफा ही थी, जिसमें नीचे बर्फ की भांति ठंडे पानी में पांव रखकर दर्शन हेतु जाना पड़ता था। गुफा की पत्थर की दीवारें फिसलन भरी थी, इसकी दीवारों में शेर के पंजो जैसे निशान जगह-जगह पड़े थे। अब गुफा में प्रवेश और निकास के लिए दो कृत्रिम रास्ते है। पहले आवश्यक एवं खाने-पीने के सामान तथा प्रसाद की गिनी-चुनी दुकानें तथा आवास-सुविधा केवल मुख्य मंदिरों के आसपास ही थी, लेकिन अब पूरे रास्ते में आपको ये सब सुविधाएं मिल जाएगी। केवल जो नहीं बदला है तो वह श्रद्धालुओं का इस यात्रा को करने का उत्साह तथा जुनून, पहले की भांति अभी भी यह यात्रा आपको दिन-रात चलती हुई उसी भरपूर जोश, उमंग के साथ मिलेगी। मुझे परिवार-सहित पुनः यह यात्रा करने की इच्छा चिर-समय से थी लेकिन शायद माँ का बुलावा अभी परिवार-सहित नहीं था।

माता वैष्णो देवी से जुड़ी प्रचलित कथा कुछ इस प्रकार है, करीब 700 वर्ष पूर्व माँ वैष्णो देवी मंदिर का निर्माण एक गरीब ब्राह्मण पंडित श्रीधर द्वारा किया गया था। एक दिन माता उसकी भक्ति से खुश होकर उसके सपने में आईं और बोली कि तुम माता वैष्णो के निमित्त एक भंडारा करो, इतना कहकर माता अंतर्ध्यान हो गई। अगली सुबह पंडित श्रीधर ने इस सपने की बात अपने परिवार वालों को बताई और फिर भंडारे के लिए सभी गांव वालों को न्यौता दे आया। पंडित श्रीधर बहुत ही गरीब थे, इसलिए वो भंडारे में आई भक्तों की भीड़ को देखकर चिंतित हो गए। कहा जाता है कि भंडारे के दिन चमत्कार हुआ, उनके इस भंडारे में एक कन्या शामिल थी, जो अपने हाथों से एक चमत्कारी बर्तन से लोगों को भोजन परोसने लगी। जितने भी लोग भोजन करने के लिए आए, उन सभी को भरपेट भोजन तथा स्थान मिला। लोगों द्वारा नाम पूछने पर कन्या ने अपना नाम वैष्णवी बताया। भोजन परोसते-परोसते जब वह कन्या गुरु गोरखनाथ के शिष्य बाबा भैरवनाथ के पास पहुँची तब उसने कहा कि मैं तो खीर-पूरी की जगह मांस मदिरा का भक्षण करूंगा। मना करने पर उसने कन्या को पकड़ना चाहा, तब कन्या (माँ वैष्णो) उसके बुरे विचारों को जान, त्रिकूट पर्वत की ओर वायु के वेग से भागी और फिर अंतर्ध्यान हो गईं। एक रात पंडित श्रीधर के सपने में आकर कन्या ने बताया कि वो माता वैष्णवी है और उसे त्रिकूट पर्वत पर स्थित अपनी पवित्र गुफा के बारे में भी बताया। पंडित श्रीधर माता द्वारा सपने में दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए गुफा के द्वार पर

पहुंचा और उसने माता वैष्णो के पिंडी रूप की पूरी विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। देवी उसकी पूजा से प्रसन्न होकर उसके सामने प्रकट हुई और आशीर्वाद दिया। तब से पंडित श्रीधर के वंशज माता वैष्णो देवी की पवित्र गुफा की पूजा करते आ रहे हैं।

वैष्णो देवी के पवित्र भवन जाने के लिए बाणगंगा पहला प्रमुख स्थान है, जोकि कटरा से लगभग एक-डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर है। पौराणिक शास्त्रों के अनुसार बाबा भैरवनाथ सभी तांत्रिक सिद्धियों को जानता था तथा उसे इन सिद्धियों का अहंकार हो गया था। उसने वैष्णो देवी को एक छोटी कन्या समझकर उसको मारने के लिए उसका पीछा किया। माँ वैष्णवी, जब बचकर त्रिकुटा पहाड़ियों की ओर हनुमान जी के साथ जा रही थीं, तब माता की रक्षा के लिए साथ चल रहे हनुमानजी को रास्ते में प्यास लगी। परिणामस्वरूप, देवी ने यहाँ एक तीर चलाया, जिससे जल धारा प्रकट हुई। यही पवित्र जलधारा बाणगंगा के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस नदी की पवित्र धारा में माता ने अपने केश भी धोए थे। कई श्रद्धालु माँ के पवित्र भवन के दर्शन करने से पूर्व यहाँ नदी में स्नान करके ही अपनी आगे की यात्रा आरम्भ करते हैं।

चरण पादुका का प्राचीन मंदिर यात्रा का दूसरा पड़ाव है। एक किंवदंती के अनुसार, जब भैरवनाथ, माँ वैष्णवी का पीछा कर रहा था तो भागते-भागते माँ वैष्णवी, भैरवनाथ को देखने के लिए कुछ देर के लिए रुक गईं। यहां माता के पैरों के निशान के कारण इस स्थान को चरण पादुका कहते हैं। यह स्थान कटरा से लगभग 2.5 किलोमीटर की दूरी पर है। माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड का गुरुकुल तथा सभी आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं से एवं प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मचारियों से सुसज्जित एक चिकित्सा इकाई भी यहाँ स्थित है। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते शाम ढल चुकी थी। सबको चाय की तलब महसूस हो रही थी, अतः एक जगह ब्रेड-पकौड़े देख हम सभी उस दुकान में घुस गए लेकिन दुकानदार ने उस समय चाय बनाने से इंकार किया। फिर थोड़ा आगे जाकर हमने एक ढाबे पर मैगी बनवा कर खाई तथा चाय पी। यात्रा के दौरान मैं कई बार अपने घरवालों से फोन पर बात करने के साथ अपनी वर्तमान लोकेशन भी भेज रही थी।

हमारी यात्रा का अगला पड़ाव अर्द्धकुवारी की पवित्र गुफा थी, यह माता के भवन के लगभग आधे रास्ते में स्थित है। यहाँ थोड़ा आराम करने के लिए हम रुके तथा कॉफी के साथ बर्गर का आनंद लिया। ऐसा माना जाता है कि भैरवनाथ द्वारा लगातार पीछा किए जाने पर, माता वैष्णोदेवी ने इस गुफा में प्रवेश किया और 9 महीने तक जैसे एक अजन्मा बच्चा अपनी माँ के गर्भ में रहता है की भांति इस गुफा के अंदर रहकर तपस्या की। तब एक साधु ने भैरवनाथ को सावधान किया कि वह जिसे एक कन्या मात्र समझ रहा है वह आदिशक्ति जगदम्बा है, पर भैरवनाथ ने साधु की बात अनसुनी कर दी। तब माता गुफा की दूसरी ओर से मार्ग बना कर बाहर निकल, वायु के वेग से उड़कर त्रिकुटा पर्वत की पवित्र गुफा में प्रवेश कर गई। यह गुफा अर्द्धकुवारी गर्भजून के नाम से प्रसिद्ध है। अर्द्धकुवारी मंदिर अगर आपने गर्भजून में जाना हो तो इधर आपको पहले दर्शन पर्ची

बनवानी पड़ेगी। दर्शन-पर्ची के आधार पर 50 लोगों का एक ग्रुप बनाया जाता है तकरीबन दो घंटे में एक ग्रुप गर्भजून का दर्शन कर पाता है। रात 10 बजे के करीब हम अर्द्धकुवारी पहुंचे तथा बाहर से ही माथा टेककर नए मार्ग की ओर चल दिए। अर्द्धकुवारी से माँ के भवन को जाने के दो मार्ग है। माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड द्वारा संचालित इंद्रप्रस्थ भोजनालय से बाएँ ओर वाया हिमकोटी से नया मार्ग भवन तक ले जाता है। इस रास्ते से भवन की दूरी लगभग 5.5 किमी है और इस रास्ते पर बैटरी से चलने वाली वाहन सुविधा भी उपलब्ध है, जबकि वाया हाथी-मत्था वाला पुराना मार्ग 6. 5 किमी लम्बा तथा इसकी चढ़ाई ज्यादा खड़ी है। यात्रा की शुरुआत में हमने हिमकोटी से बैटरी वाली गाड़ी से जाने का सोचा था लेकिन इधर आकर पता चला कि इसके लिए ऑनलाइन एडवांस बुकिंग करनी पड़ती है। अतः हम भवन की ओर पैदल चल दिए।

पूरे रास्ते का वातावरण भक्तिमय था। मानो प्रकृति में ही माता का वास हो। रास्ते-भर माता के भजन गूंज रहे थे, आते-जाते लोग माता के जयकारे लगा रहे थे तथा ढोलक की थाप पर श्रद्धालुओं के समूह नाचते-गाते आगे की ओर बढ़े जा रहे थे। एक अलग ही उत्साह-उमंग थी, थकान का नामो-निशान नहीं था, जैसे कोई शक्ति ऊपर की ओर आकर्षित कर रही थी। बारिश होने के कारण मौसम भी सुहावना था। माता का द्वार दिन-रात दर्शन के लिए खुला रहता है। रात्रि में भी दर्शन हेतु भक्तों की लंबी कतारे लगी रहती है। ऐसा कहा जाता है कि जब माता त्रिकूट पर्वत की गुफा में प्रवेश कर गई, तो हनुमान जी गुफा के बाहर माता की रक्षा के लिए भैरवनाथ से युद्ध करने लगे, यह युद्ध काफी लम्बे समय तक चला। जब माता ने देखा कि भैरवनाथ समझने के लिए तथा पीछे हटने के लिए तैयार नहीं है तब माता वैष्णवी ने महाकाली का रूप धारण कर त्रिशूल से भैरवनाथ का संहार किया। भैरवनाथ का सिर कटकर भवन (माता की पवित्र गुफा) से लगभग 3 कि.मी. दूर त्रिकूट पर्वत की घाटी में गिरा। जिस स्थान पर माता वैष्णो देवी ने हठी भैरवनाथ का वध किया, वह स्थान पवित्र गुफा अथवा भवन के नाम से प्रसिद्ध है तथा जिस स्थान पर भैरवनाथ का सिर गिरा वह उसके मंदिर के नाम से जाना जाता है।

माना जाता है कि बाबा भैरवनाथ को अपनी भूल का पश्चाताप हुआ। उसने माँ से क्षमा याचना की, तब माता ने उसे पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कर दिया। वैष्णो देवी ने भैरवनाथ को वचन दिया था कि जो कोई भी उसकी पवित्र गुफा के दर्शन के लिए आएगा, उन तीर्थ-यात्रियों की यात्रा बाबा भैरवनाथ के दर्शन के बिना पूरी नहीं मानी जाएगी। इसके बाद माँ तीन पिंडी सहित एक चट्टान का आकार ग्रहण किया और सदा के लिए ध्यान मग्न हो गई। भवन से भैरों घाटी की चढ़ाई खड़ी तथा कठिन है। वहां जाने के लिए रोपवे (केबल कार) की सुविधा उपलब्ध होने से दर्शन काफी सुलभ हो गया है। हम लोग रात के लगभग 12.30 बजे भवन पहुंचे, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हम धरती पर नहीं अपितु किसी अलौकिक लोक में खड़े है। इस समय भी दर्शन हेतु लोगों की काफी भीड़ थी। भवन के भीतर मोबाइल फोन, कैमरा, पर्स, चमड़े का सामान, चाकू, सिगरेट, लाइटर आदि ले जाना निषेध है। यहाँ श्राइन-बोर्ड द्वारा संचालित भेंट शॉप (प्रशाद की दुकान) तथा मुफ्त लॉकर सुविधा

उपलब्ध है। हम सबने लॉकर में अपना सामान रखकर भेंट शॉप से माँ को अर्पित किया जाने वाला प्रसाद लिया, प्रसाद की सभी सामग्री कपड़े के थैले में पहले से ही पैक रहती है। दर्शन करने जाते हुए पहले पुरानी गुफा आती है यह गुफा केवल जिन दिनों लोगों की भीड़ नही रहती उन दिनों ही खुलती है। हमने नई गुफा से ही माता की पवित्र पिंडियों के दर्शन किए। भवन में दर्शन हेतु लंबी कतारे थी, परन्तु हमारी कतार को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा, थोड़ी देर बाद गुफा में प्रवेश मिला और माता के दर्शन हुए। दर्शन उपरांत असीम आनंद की अनुभूति हुई, ऐसा लगा मानो कोई चिर-समय से चली आ रही इच्छा की पूर्ति हुई हो। यहाँ से जब मैंने घर पर अपनी वर्तमान लोकेशन के साथ मैसेज भेजा, तुरंत घर से बेटे का फोन आ गया, वो उस वक्त तक जाग रहा था। घर पर सब मेरे पैदल भवन तक जाने से हैरान थे क्योंकि मैं घुटनों की समस्या के कारण अधिक देर तक पैदल नहीं चल पाती हूँ। शायद माता के पवित्र भवन के दर्शन करने की मेरी दृढ़ इच्छा-शक्ति तथा अन्य यात्रियों का जोश देखकर ही मैं अपनी यात्रा सम्पन्न कर पाई।

यात्रा के लिए आपको खाने-पीने की सामग्री ले जाने की आवश्यकता नहीं है, मार्ग में बहुत सारे भोजनालय और जलपान केंद्र हैं। यहां आपको मुफ्त और किराए पर, दोनों प्रकार की आवास सुविधा आसानी से मिल जाती है तथा सुरक्षा-राशि देकर निःशुल्क गद्दे-कंबल भी मिल जाते है। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड द्वारा संचालित स्वच्छ, सुव्यवस्थित वातानुकूलित और गैर वातानुकूलित दोनों तरह की आवास सुविधा यहाँ उपलब्ध है। यात्रा को सभी मुख्य सुविधाओं जैसे पीने का पानी, शौचालय, ए.टी.एम., आवास, बिस्तर, शाकाहारी भोजनालय, चिकित्सा सुविधा, बैंक, क्लॉक रूम, कंबल स्टोर, रेस्ट रूम आदि सभी सुविधाओं को उपलब्ध करवाकर सहज और सुलभ बनाया गया है। पूरा रास्ता साफ-सुथरा, जाली और रेलिंग लगा है तथा काफी रास्ता ऊपर छत लगाकर ढका हुआ है ताकि गर्मी, सर्दी अथवा बरसात में यात्रियों को अधिक परेशानी न हो। जम्मू यू.टी. एरिया में प्रवेश करते ही आपके मोबाइल की प्री-पेड सिम नहीं चलती, इधर कई दुकानों में आपको पोस्ट-पेड सिम भी किराए पर मिल जाती है। अर्द्धकुवांरी तक आपको काफी सारी खाने-पीने की सामग्री, चप्पल-जूते, गर्म कपड़े, फोटो-स्टूडियो, प्रसाद, मसाज सेंटर, मेडिकल स्टोर, स्मृति चिन्ह, सीडी, ऑडियो कैसेट, मूर्तियां तथा जो माता को भेंट की जाने वाली वस्तुएं जैसे चुनरी, नारियल, प्रसाद, चोला, चांदी के सिक्के, सूखे मेवे, फूल आदि की दुकानें मिल जाएगी। बहुत सारी दुकानों में शरीर की मसाज करने हेतु विशेष कुर्सियां लगी हुई है जिनमें आप यात्रा उपरांत मसाज लेकर थकावट से थोड़ा राहत महसूस करते है।

दर्शन उपरांत अपनी स्मृति के लिए पूरे ग्रुप ने एक फोटो लिया तथा श्राइन-बोर्ड के भोजनालय में भोजन किया। सारी रात लगातार चलने के कारण तथा अगली सुबह ट्रेनिंग-कक्षा में उपस्थिति दर्ज करने का ध्यान कर हम सबने माता के दर्शन के बाद, बाबा भैरवनाथ मंदिर जाने का विचार त्याग कर तथा भवन से ही उनके मन्दिर की ओर मुंह करके माथा टेक क्षमा-याचना की तथा वापसी के लिए प्रस्थान करना ही उचित समझा। मैं और मेरी एक महिला सह-यात्री अब तक काफी

थक चुकी थीं, अतः हम दोनों ने घोड़े द्वारा, जबकि हमारे अन्य साथियों ने पैदल वापसी की। सुबह लगभग पांच बजे हम दोनों तथा छः बजे तक अन्य पैदल-साथी भी कटरा पहुँच गए। यहाँ तुरंत ही हमें जम्मू जाने के लिए बस मिल गई, साढ़े आठ बजे हम जम्मू स्थित क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान पहुँच गए। दस बजे हम सभी छः साथियों को प्रशिक्षण कक्ष में देखकर प्रशिक्षण हेतु अन्य कार्यालयों से आए सभी साथी हैरान थे, शायद उन्हें हमारी इतनी जल्दी वापसी की आशा नही थी।

माँ वैष्णो देवी का रास्ता पहाड़ की चोटियों के बीच से होकर गुजरता है, सुबह-शाम उगते और ढलते सूरज का प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण अद्‌भुत नजारा हमें देखने को मिला। इस प्रकार माँ वैष्णो देवी की यात्रा मधुर-स्मृतियों के साथ सम्पन्न हुई। ऐसी मान्यता है कि माता के दर्शन वही कर पाता है जिसको उसका बुलावा होता है और उसके दरबार में सच्चे मन से मांगी गई मन्नत अवश्य पूर्ण होती है। प्रशिक्षण दौरे के दौरान माता वैष्णो देवी का दर्शन कर पाना मैं अपना सौभाग्य मानती हूं। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि शीघ्र मैं अपने परिवार सहित माँ वैष्णो देवी के पुनः दर्शन कर सकूं।

कैप्टन जितेंद्र मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट

लेखापरीक्षा सप्ताह 2022 के दौरान आयोजित रक्तदान शिविर

उत्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन टूर्नामेंट 2022–23 के उद्घाटन समारोह में हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर जी

उत्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन टूर्नामेंट 2022–23 में कार्यालय प्रधान महालेखाकार, हिमाचल प्रदेश, शिमला के बैडमिंटन खिलाड़ी

परमार्थ का प्रतिफल

श्री पवन कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री छज्जू राम जी जो कि शिमला के एक नामवर हलवाई और शादी व अन्य आयोजनों में भोजन बनाने में ख्याति प्राप्त थे। कहा जाता है जीवन के आरंभिक काल में लाहौर में उन्होंने पाक-कला को अर्जित किया था। शिमला में बड़े-बड़े दुकानदार उन्हें दीवाली व अन्य त्यौहारों पर बुला कर उनकी इस पाक कला का लाभ लेते रहे थे। अध्यात्म के क्षेत्र में अग्रणी, सहज स्वभाव के साथ हँसमुख व प्रसन्नचित व्यक्तित्व के वे मालिक थे।

आज सर्दियों की ऋतु, 1990 में, श्री छज्जू राम जी पठानकोट, अपने पैतृक गाँव में आए हुए हैं। इस दौरान आस-पास के गाँव में जहाँ उनके परिजन, इष्ट-मित्र, परिचित सभी से मिलना व उनकी कुशलक्षेम पूछना उनके इस सालाना भ्रमण का अभिन्न हिस्सा रहता है।

इसी क्रम में, जब वे सरना गाँव से गुजर रहे थे तो उनकी दृष्टि एक दस-ग्यारह वर्ष के अबोध बालक पर पड़ी जो की मात्र निक्कर में अन्य बच्चों के साथ खेल-कूद में व्यस्त था।

श्री छज्जू राम जी ने उस बालक के पास जा कर पूछा 'बेटा, तेरा नाम क्या है ?'

बालक ने कहा - 'तेरा नाम क्या है ? '

श्री छज्जू राम जी ने कहा, बेटा आपके पिताजी का नाम बताओ और तुम्हारा घर कहाँ है बताएं ?'

जैसे अपनी कला क्षेत्र के इस चाणक्य ने भावी चंद्रगुप्त मौर्य देख लिया हो। अतः इस आग्रह प्रयत्न से श्री छज्जू राम बालक के संग, उस के घर आकर पिता से मिलकर बातचीत करने लगे। बातचीत में पिता ने बताया कि घर का गुजारा बमुश्किल से हो पाता है। सोच रहा हूँ इसको किसी काम धंधे में लगा दूँ। यह सुनते ही श्री छज्जू राम ने अपने कारोबार का विवरण दिया और कहा कि इस बालक को आप मेरे साथ शिमला भेज दें। चलते हुए उन्होंने कहा ''भविष्य में यह बालक इस कारोबार का योग्य कारीगर व उस्ताद बनेगा। इसके खान-पान, रहन-सहन, कपड़े-लत्ते, वेतन व काम सीखने की पूरी जिम्मेदारी मेरी है। चार दिनों में मुझे वापस शिमला जाना है, इसे तैयार रखें, मैं वापस आकर इसे अपने साथ ले जाऊँगा।'' फलतः दस वर्ष का बालक जगदीश उर्फ छोटू का अपनी भावी कार्यस्थली शिमला में श्री छज्जू राम जी संग आगमन हो गया।

श्री छज्जू राम जी के छोटे भाई, श्री कुन्दन लाल, जिन्होंने दीना नगर (पठानकोट) से स्नातक की डिग्री 1980 में प्राप्त की थी, और नौकरी हेतु प्रयास किए परंतु बात न बनी। दोनों भाईयों का प्रेम अतुल्य था। 1980 से ही श्री छज्जू राम जी उन्हें अपने साथ ले आए व अपने कारोबार में हिस्सेदार बना लिया। इस कारोबार व दुकान की जिम्मेदारियों ने जगदीश यानि छोटू को सजग, समझदार व अनुशासित बना दिया। वर्ष में एक बार सर्दियों में ही दो सप्ताह के लिए पठानकोट जा पाते। हलवाई व शादी-विवाह में तरह-तरह के पकवान बनाने में छोटू अभ्यस्त होते जा रहे थे। आगामी वर्ष छोटू के आग्रह अनुशंसा पर छोटू के अनुज, जगीरा साईं को भी शिमला बुला लिया गया।

समय का पहिया गुजरता रहा :- श्री छज्जू राम जी के इस कारोबार में तरक्की होती जा रही थी। उनके पहले शिष्य, श्री कुन्दन लाल व दूसरे छोटू, काम में प्रवीण हो चले थे। साथ ही, जगीरा साईं भी इस क्रम में अपनी उपस्थिति से सभी को प्रभावित कर चुके थे। दोनों भाईयों का वेतन (सालों-साल) श्री छज्जू राम, श्री कुन्दन जी के पास जमा रहता व एक अच्छी खासी रकम का रुप धारण कर लिया करता। समय व्यतीत होता रहा। सब्र व कुछ खुशहाली की किरणें दिखाई देती। छोटू के पिता, अपने बच्चों के लिए वैवाहिक संबंधों हेतु प्रयास करने लग गए थे।

साल-दर-साल, विवाह के आयोजन की चर्चा व तिथि से छोटू को अवगत कराया जाता। वांछित रकम, श्री छोटू ऐसे अवसरों पर अपने पिता को देते व सफलतापूर्वक विवाह कार्य सम्पन्न हो जाते। माता-पिता, छोटू की लगन व योगदान से संतुष्ट थे। अब तक तीन बड़े भाईयों व एक बहन की विवाह की जिम्मेदारियाँ पूरी हो चुकी थी। छोटू-जगीरा साईं और दो छोटी बहनों की शादियाँ अभी शेष थीं। इसी दौरान पहले तो श्री छज्जू राम जी स्वर्ग सिधार गए व कुछ महीने उपरांत छोटू के माता-पिता भी अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर प्रभु चरणों में लीन हो गए। यह समय कारोबार व छोटू के अपने परिवार व आगामी जिम्मेवारियों के मद्देनजर कुछ चिंता बढाने वाला था। अपने से बड़े भाईयों से आगामी वैवाहिक जिम्मेवारियों के नियोजन हेतु चर्चा की गई तो बहुधा, उन्होंने स्वयं के विवाह होने के कारण पारिवारिक जिम्मेवारियों का एहसास दिलाते हुए भविष्य में आर्थिक सहयोग न कर पाने की विवशता के संकेत आपसी बातचीत में जाहिर कर दिए।

छोटू का कुछ दुखी व हतप्रभ होना स्वाभाविक था। परंतु भगवान के सहारे व राह आसान करने की उनकी उम्मीद बहुत प्रबल थी। प्रभु में आस्था के संग उनकी मेहनत व लगन और बढ़ गई थी। छोटू का संघर्ष जारी रहा। आगामी दो वर्षों में प्रभु कृपा से दोनों छोटी बहनों का योग्य वर देख विवाह कर दिया गया। कुछ अरसे बाद, छोटू यानि जगदीश सिंह स्वयं भी परिणय सूत्र में बंध गए। बस अब पूरा ध्यान जगीरा साईं के घर बसाने पर केंद्रित हो गया था। समय की गति के अनुरुप अब जगीरा साईं की शादी की तिथि निश्चित हो गई। परिवार की यह आखिरी जिम्मेदारी पूरी हो रही थी। चाव व शुक्रिया का भाव घर में दिखाई पड़ा था। जगीरा साईं की शादी में श्री कुन्दन ने अभिभावक व पिता के रुप में सहर्ष उपस्थिति दर्ज की। अब नई बहू गृह प्रवेश कर चुकी थी। पिछले चार-पाँच दिनों से घर का वातावरण जो उल्लासपूर्ण था, अब धीरे-धीरे सामान्य सा होने लगा।

छोटू ने शाम की चाय पी और अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने मित्र रहमत सिंह से मिलने जा रहे हैं। मित्र के घर जाकर छोटू ने उसे कुछ उधार रकम देने का आग्रह किया। रहमत ने भी उसे 1000/- रुपये दे दिए। छोटू जल्द ही घर लौटे व जगीरा साईं को कहा ''कल तुम बहू सहित शिमला जाओ। 10-12 दिन के लिए तुम दोनों का भ्रमण भी हो जाएगा। कुन्दन, चाचा जी के साथ 4-5 विवाह आयोजनों का काम भी निपट जाएगा, कुछ रकम ले कर फिर आ जाना। विवाह पर वाजिब खर्चा हुआ है, अब कुछ रकम नहीं बची है।'' बहू व जगीरा साईं शिमला चले आए।

आज छोटू जी सुबह 7:30 बजे तक रजाई ओढे सोए हुए हैं। पत्नी ने पूजा कर ली, चाय भी कप में डाल दी गई। छोटू की पत्नी भी उसी की तरह समझदार, सुनियोजित व स्पष्टवादी थी। घर में खर्चा पानी हेतु रकम खत्म होने के कारण कुछ फिकरमंद होना लाजमी ही था। इसी बीच पत्नी ने हुँकार भर कर छोटू को उठ कर चाय पीने को कहा, साथ ही कहा ''लेटे-लेटे काम नहीं बनते, उठो इधर-उधर के गाँव में दिहाड़ी लगाओ, ताकि राशन पानी की व्यवस्था हो सके।''

छोटू साहब उठे व चाय पीने लगे। तुरंत हाथ-मुँह धो कर साईकल निकाल दूसरे गाँव जाने के लिए निकल पड़े। घर खर्च के लिए रुपए पैसे की कमी की चिंता ने अचेतन साईकल की गति तेज कर दी। तभी रास्ते से पीपल के पास से गुजरते छोटू को रेत में नोट पड़े होने की झलक सी दिखाई दी। साईकल की गति तेज होने के कारण वह 80-100 मीटर आगे आ गए थे। जरुरत ने कहा ''पुनः निरीक्षण कर ले, जेब भी खाली है।''

वापस आ कर पीपल के समीप खोज कर रहे थे तो पाया कि सौ-सौ रुपए के सात नोट मिल गए। छोटू साहब ने धूल साफ की, नोटों को माथे से लगा कर, कमीज की जेब में रख, धीरे-धीरे साईकल घर की तरफ मोड़ दी। सहज मन, हृदय आभार से लदा, चित्त शांत, साईकल की गति अब मध्यम थी। दुकान से छोटू ने चीनी, चावल इत्यादि कुछ और सामान खरीदा व घर जाकर पत्नी को थमा दिया। वह हैरान चित्त बोली ''क्या इतनी जल्दी वापस ? यह सामान कैसे ? उधार लिया ?'' छोटू ने कहा, नहीं जी व पूरा घटनाक्रम सुना दिया। साथ ही, बाकी रकम, 520/- रुपए पत्नी को थमा दी। पत्नी ने रकम को दोनों हाथों से लेकर नानक जी की लगी तस्वीर को देख कर सिर झुका कर मन-ही-मन शुक्राना अदा किया। पलट कर सहज भाव से छोटू से कहा ''रोज-रोज नानक साहब मदद के लिए न आऐंगे, कल से अपने हाथों से मेहनत का काम करें। मैं अब नाश्ते के साथ चाय बना देती हूँ। नाश्ता करो व चाय भी पी लेना।''

सांध्य काल छोटू गाँव के रहने वाले राज मिस्त्री, वचित्र सिंह से मिले व कहा ''मिस्त्री देहाड़ी लगानी है, काम-काज कहाँ चल रहा है।'' वचित्र सिंह ने कहा, ''काम तो है कल से अगले गाँव गुरुनाम में सरपंच, सिमरन कौर के घर में 5-6 दिनों का चिनाई का काम है।'' सो अगले दिवस छोटू साईकल से गुरुनाम गाँव के सरपंच सिमरन कौर के घर निकल पड़े। अपने साथ एक छोटा बैग लिया था। खाने का डिब्बा पहले ही वचित्र के हाथ में थमा दिया था। मिस्त्री वचित्र सिंह से अलग जाने का कारण यह था कि उनके परिचित यह न देख लें कि शिमला के दावत बनाने वाले उस्ताद अब मजदूरी करने को क्यों मजबूर हुए। जबकि व्यक्तिगत रुप से वे उस कमजोरी से पार पा चुके थे।

गुरनाम गाँव की सरपंच सिमरन कौर के घर पहूँचते ही मजदूर रुप में छोटू साहब का परिचय करवाया गया। छोटू को नीचे से ऊपर तक सिमरन कौर ने देखा और बोली-''मिस्त्री, यह मजदूर पहली बार आया है क्या काम करने ? साफ-सुथरे परिधान और नहा-धोए हुए ऐसे सर्दी के मौसम में मजदूर को मैं तो पहली बार देख रही हूँ।''

मिस्त्री ने कहा - ''नहीं, नहीं, काम जानता है।''

सिमरन बोली - ''चलो, देख लेते हैं।''

आज और कल आधा दिन में नींव का काम समाप्त हो जाएगा, मिस्त्री ने सिमरन कौर को बताया। छोटू साहब ने बैग से अपने काम करने की वर्दी निकाली, जूते उतार कर चप्पल डाल ली और घर से आने जानेवाली वर्दी तार पर विधिवत टांग दी। पुनः यह देख सरपंच बोली -''मिस्त्री यह मजदूर तेरा विशेष ही है।'' काम जोर-शोर से शुरु हो गया। वचित्र, मिस्त्री, छोटू व दिलावर काम में जुट गए।

जब दोपहर का खाना खाने लगे तो छोटू ने सिमरन कौर को कहा - ''मैडम जी थोड़ा अचार मिलेगा ?'' वह बोली - ''जी जरुर मिलेगा।'' साथ ही कहा - ''वचित्र सिंह, पहली बार इस गाँव में मुझे किसी ने मैडम संबोधित किया है। यानि यह तेरा मजदूर बाहर से कहीं रह कर आया है, चाहे तू लाख पर्दा करता रह।'' छोटू व दिलावर सिंह के श्रम से नींव बनाने का काम लगभग पहले ही दिन खत्म हो गया।

दूसरे दिन वचित्र सिंह अपने भतीजे, कालू राम को भी साथ लाया और बताया कि वह भी मिस्त्री का काम सीख चुका है। वचित्र और कालू राम ने दो मजदूरों के सहयोग से दो बोरी सीमेंट व आठ बोरी रेत का अच्छा खासा मसाला ईंट चिनाई के लिए तैयार करवा लिया। अब सभी चाय पीने लगे। तभी चाय पीकर वचित्र सिंह ने छोटू को पास बुलाया और कड़क आवाज में कहा ''अब ईंट चिनाई का काम शुरु करना है। ध्यान से सुन ले, इस चिनाई स्थान पर मुझे ईंटों की कमी न हो और यदि तेरी इस स्थान पर पहुँचाई गई ईंटों के कारण मेरा चिनाई का काम रुक गया तो मजदूरी की आमदन तुझे न मिलेगी, मैं ले लूँगा। और यदि ईंटें मैं न लगा सका तो अपनी मजदूरी तुझे दे दूँगा, समझ गया तू छोटू। चल अब ईंट ढुलाई का काम शुरु कर।'' वचित्र की इस डाँट और एक तरफा जीत की भूमिका को सिमरन कौर पास खड़ी सुन कर क्षुब्ध सी दिखी, जैसे कुछ बोलना चाहती हो पर खामोश ही रही। छोटू साहब शांत रह कर अपनी शक्ति जैसे एकत्र करने का आह्वान कर रहे हों। छोटू ने तभी सिमरन कौर से कहा ''मैडम, छोटी-मोटी रस्सी का टुकड़ा मिल सकता है।''

वह बोली ''क्या करनी रस्सी, मिस्त्री को बाँध कर पीटना है क्या छोटू ?''

छोटू बोला ''नहीं जी, ईंटें उठाने का जुगाड़ बनाना है।''

सिमरन ने घर से लाकर एक रस्सी छोटू को दे दी। ईंट ढुलाई की दूरी करीबन 25-30 मीटर की थी। छोटू ने सहयोगी मजदूर दिलावर को कहा ''भाई चल, काम में जुट जाएं, यह अब स्पर्धा की बात नहीं, बात अब पौरुष व इज्जत पर ही आन पड़ी है। दिलावर को 28 ईंटों का स्टैग तैयार करने का तरीका छोटू ने समझाया और कहा ढुलाई का काम मेरे कंधे पर होगा।''

पहले फेरे में तेज कदमों से 28 ईंटें छोटू ने पहुँचाई, वचित्र कुछ हैरान था। इस तरह पीठ पर ईंटें ढोने का तरीका उसने न देखा था। दूसरे फेरे में क्रमशः 30, आगामी 32, 34 और 36 ईंटें प्रति फेरे ढुलाई होने लगी। आगामी तीन घंटे बाद मिस्त्री के पास अब ईंटों की मात्रा उसकी कार्य कुशलता को चुनौती देती दिख रही थी। अगले दो दिनों में छोटू ने दूसरे काम में सहयोग के साथ-साथ वचित्र सिंह के चिनाई स्थल पर 5000 ईंटें जमा कर उसे अचंभित व क्षीण सा कर दिया था। उसकी कार्य गति को छोटू ने जैसे नाप लिया हो। वह अब सहज रुप में बाकि ढुलाई करने लगे। घर के कामों से बाहर आते-जाते इस ढुलाई श्रृंखला से सिमरन कौर मन ही मन छोटू को देख संतोषरुप में सिर हिला देती, जैसे उसे आशीष दे रही हो। आज सायं समस्त निर्माण कार्य खत्म हो गया। सिमरन कौर प्रसन्नचित भी थीं और कुछ उद्विग्न भी। उसने वचित्र सिंह को बुलाया और कहा ''तेरी मजदूरी के मैंने 2000/- रुपए काट लिए हैं। इस पर सिर्फ तेरी तय शर्त के मुताबिक छोटू का ही हक है।''

छोटू जो पास ही था, बोला ''मैडम जी, रहने दो इसको सबक मिल गया।''

सरपंच सिमरन कौर ने कड़क आवाज में कहा ''तू चुप रह छोटू। फैसला हो चुका है।'' अतः वचित्र को कुछ डाँट लगा कर सरपंच साहिबा ने छोटू को मजदूरी के और 1500/- रुपए अतिरिक्त दे दिए। सायं काल घर जा कर पूरी राशि छोटू ने अपनी पत्नी के हाथों में थमा दी। वह राशि आगामी 15 दिनों के खर्च पानी के लिए पर्याप्त थी। साथ ही, 1000/- रुपए से मित्र रहमत अली का कर्ज चुकाया जा चुका था।

शाम की चाय पी कर, संध्या पूजा से निवृत्त हो छोटू शांत भाव से कम्बल ओढे बिस्तर पर लेटे मंद मुस्कान में लीन थे। शायद अपने उस्ताद गुरु छज्जू राम जी को प्रथम परिचय स्वरुप उनके बाल्यकाल की वो स्मृति के वाक्य अंश कि तेरा नाम क्या है, याद आ गए। जीवन की आगामी यात्रा उस्ताद जी की अनुकम्पा स्नेह छोटू के हृदय पटल पर दस्तक दे रहा था और सहसा ही शुक्रिया कहते हुए उनकी आँखें झुक सी गईं, कुछ बूँदें निर्झर सी बहने लगीं। छोटू साहब ने मुख कम्बल से ढक लिया और इन मोतियों को दोनों हाथों से संभाल कर सिर से लगा लिया। कुछ क्षणों तक गुरु-शिष्य यादों के सागर में हिलोरें लेते रहें। साथ ही, छोटू जैसे निःशब्द शुक्रिया करते कह रहे हों ''आपकी अनुकम्पा से परमार्थ का प्रतिफल मिलना तो तय ही था गुरुदेव !''

आखेट

समता खानचंदानी
कनिष्ठ अनुवादक

धूप-छाँव के अरण्य में
हृदय का आखेट खेला

प्रत्यंचा चढ़ा...लक्ष्य साध कर
स्वयं के व्यूह को तोड़ा...भेदा..
जीवन के इस बियावान में
मृग भी 'मैं' ....मरीचिका भी 'मैं'
'मैं' के प्रतिबिम्ब में 'मैं' ने देखा... तीर छोड़ा..
शुष्क कंठ.. अवरुद्ध श्वास से
खुद को छिपाया... खुद को ढूंढा...
धूप-छाँव के अरण्य में
हृदय का आखेट खेला..

श्रम-विश्राम के दो तटों पर
प्राणों के काष्ठ को थामा
स्थल के स्पंदन को छोड़
पुरुषार्थ में भीगा ...गला...
उच्छल तरंगों को झेला
मझधार में तरा... नितांत किनारे पर डूबा..
धूप-छाँव के अरण्य में
हृदय का आखेट खेला !!

हंसना जीवन का आनंद

दिनेश कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आनंद को प्राप्त कर व्यक्ति अपने मूल स्वरुप से तारतम्य स्थापित करता है। खुशी आनंद की एक अवस्था है। शब्दकोश के अनुसार मुस्कुराहट चेहरे का ऐसा भाव है जिसमें होठों के किनारे हलके से ऊपर की तरफ उठ जाते हैं तथा इससे व्यक्ति का उत्साह, उसकी रजामंदी या खुशी जाहिर होती है।

खुश रहने से हमारे शरीर एवं मन पर आश्चर्यजनक प्रभाव होते हैं। यदि आप इस अवस्था में रहने के लिए अपने मस्तिष्क को प्रशिक्षित करते हैं तो वह उसी तरह रहना सीख जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपका मन जो कुछ भी कहता है आपका दिमाग वही मानता है। मुस्कान तथा प्रसन्नता शोक, भय, क्लेश जैसी प्राण घातक वृत्तियों का उन्मूलन पलभर में कर डालते है तथा इसी कारण आनंद को ईश्वरीय गुण कहा गया है क्योंकि यह हमारे शरीर में मधुर रस उत्पन्न करता है तथा हमें अंतर से साक्षात्कार कराता है।

भौतिकता की अंधी दौड़ में भागते हुए इंसानों को यदि कोई मुस्कुराता हुआ व्यक्ति दिखता है तो उसे देखकर वे बड़े खुश हो जाते है ऐसे में कभी-कभी इंसान अपनी परेशानियां भी भूल जाते हैं तथा प्रसन्न व्यक्ति की ओर आकर्षित होते हैं।

हंसने वालों की तरफ सम्पूर्ण संसार आकर्षित होता है और रोने वाले से सब दूर भागते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य जितनी देर हंसता है, उतनी ही अवधि की वृद्धि वह अपने जीवन में कर लेता है। आपको जब भी हंसने का अवसर मिले, तब जी भर कर खूब हंसना चाहिए क्योंकि जो व्यक्ति हंसना नहीं जानता, वह जीना नहीं जानता। तभी तो कहते हैं कि जो हमेशा हंसता-मुस्कुराता है वह 80 वर्ष की अवस्था में भी नौजवान लगता है वहीं इसके बिलकुल विपरीत जो उदास और परेशान रहता है, वह उम्र से पहले ही बड़ा लगने लगता है।

हंसना आपको भावात्मक तथा शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है और परिस्थितियों को आसानी से संभालने की आपकी शक्ति को मजबूत करता है। हंसने से अनेक द्रव्य मस्तिष्क में प्रवाहित होते हैं जो हमें अनेक बीमारियों से बचाते हैं तथा सेहतमंद रखते हैं, इसलिए हास्य को स्वास्थ्य का मूल-मन्त्र माना गया है। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि उत्तेजनाओं से जो शारीरिक हानि होती है, मनोविकारों का जो विष अवयवों में संचित हो जाता है वह हंसने से दूर हो जाता है। हंसने से फेफड़ों को भी नवीन शक्ति मिलती है जिससे शरीर का रक्त शुद्ध तथा सशक्त बनता है।

एक-दूसरे से आगे निकलने की दौड़ में मनुष्य हंसना ही भूल गया है। आजकल हंसने के लिए अनेक तरह के कार्यक्रम शुरू हुए है जिन्हें 'लाफिंग क्लब' भी कहते है। लेकिन ऐसी हंसी का क्या फायदा जो प्रयास करके आए। कृत्रिम हास्य में क्या आनंद !

असली आनंद तो वास्तविक मुस्कान में है, जो अंदर से आए, जिसे महसूस किया जा सके। हंसी ईश्वर द्वारा दिया गया मनुष्य के लिए ऐसा उपहार है जिसकी अनुभूति होते ही वह संसार के दुःख-दर्दों, चिंताओं आदि को भूल जाता है। हमेशा वही करिए जो आपका दिल कहता है, मन चाहता है, निश्चय ही ऐसा करके आपको अपार सुख मिल सकता है। जीवन में संतुष्टि के भाव होंगे वहाँ खुशी स्वतः ही आएगी।

काश बदल जाए ये हिन्दुस्तान

प्रभात कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

काश! कोई हिन्दु होता न मुसलमान,
एक ही रंग हैं लहू के, तो क्यों बँटता इंसान।
राम-रहीम के भेदभाव से, ऊंच-नीच के तानाशाहों से,
अरे! धर्म के ठेकेदारों देखो, क्यों दहल रहा हिन्दुस्तान।
काश! घर- घर होती बेटियां और बेटे एक समान,
होती नही ये भ्रूण हत्या, न दहेज का दुष्परिणाम।
रो रहा है वो पिता, जिनकी बेटियां है संतान,
अरे बन्द करो घिनौना खेल, सिसक रहा है हिन्दुस्तान।
काश! चारों ओर होती हरियाली, सुंदर ये जहान,
जल, जमीन, जंगल बचे, तब बचेगा ये जग -महान।
पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ, जागो जागो हे इंसान,
अरे बिन मौसम गर्मी, वर्षा से तप रहा हिन्दुस्तान।
काश! हर वृद्धाश्रम खाली होता, पूरे होते अरमान,
बूढ़े बरगद की छांव में, हर बच्चे को मिलता वरदान।
ये जीवन चक्र है, घूमेगा, बांध ले गांठ तू हे इंसान,
झूठी आस है बूढ़ी आंखों में, बिलख रहा है हिन्दुस्तान।
काश! घर-घर होते भगत सिंह और विवेकानंद महान,
युवा शक्ति हो नशा मुक्त, देश का गौरव, देश की शान।
गहरी धुंध की माया में निर्बल, असहाय, पड़ जाता प्राण
टूट जाती है बुढ़ापे की लाठी, तब क्रंदन करता हिन्दुस्तान ।

भारतीय मतदान महोत्सव

दया सागर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इसलिए भारत में नागरिक मतदान के माध्यम से भारतीय नागरिकों के लिए नागरिक सरकार का गठन करते है। चुनाव प्रक्रिया एक बहुत ही खर्चीली, जटिल और लम्बी प्रक्रिया है जिसके लिए सरकार को काफी खर्चा करना पड़ता है। भारत में मतदान को एक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है क्योंकि इसमें हर वर्ग के नागरिक भाग लेते हैं अपितु भारतीय चुनाव प्रकिया में भाग लेना भी एक गौरव की बात है।

मुझे हिमाचल प्रदेश में विधान सभा चुनाव-2022 के दौरान पीठासीन अधिकारी के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। हिमाचल प्रदेश के विधान सभा चुनाव-2022 में कुल 7881 मतदान केंद्र बनाये गए। हिमाचल एक शांत प्रदेश है और यहाँ मतदान प्रक्रिया भी शांतिपूर्ण तरीके से पूर्ण हो जाती है।

राज्य व केंद्र सरकार के कर्मचारियों और अधिकारियों को चुनाव कर्तव्य के लिए नामित किया जाता है। एक मतदान केंद्र में मतदाताओं की संख्या के आधार पर एक पीठासीन अधिकारी के साथ तीन या चार मतदान अधिकारी होते है। मतदान केंद्र, मतदान अधिकारियों और मतदान उपकरणों की सुरक्षा के लिए पुलिस के सुरक्षाकर्मियों को भी नियुक्त किया जाता है। मतदान केंद्र स्तर का अधिकारी (बी.एल.ओ) चुनाव प्रकिया में उनकी सहायता करता है। मतदान केन्द्रों में पर्यवेक्षक व अन्य अधिकारी समय-समय पर मतदान केन्द्रों का निरीक्षण करते है।

एक महीने पहले से ही मतदान प्रक्रिया के लिए प्रशिक्षण शुरू हो जाता है। ये प्रशिक्षण स्थानीय जगह पर दिया जाता है, जिस स्थान पर अधिकारी की राज्य या केंद्र के किसी कार्यालय में नियुक्ति होती है। मतदान अधिकारियों को मतदान के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरणों (ई.वी.एम) के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है। मतदान से सम्बंधित नियमों की जानकारी दी जाती है। प्रश्नोत्तरी के द्वारा अधिकारियों का ज्ञान बढाया जाता है और ये बड़ा रुचिकर भी होता है ।

उपरोक्त प्रशिक्षण के पश्चात अधिकारियों को दिनांक 09.11.2022 को सुबह 10 बजे चयनित निर्वाचन क्षेत्र में पहुंचना था। मैं दिनांक 08.11.2022 की शाम को जिन्हें मूलरूप से सहायक पीठासीन अधिकारी नियुक्त किया गया था, उनके साथ निर्वाचन क्षेत्र में पहुंचा। रहने की व्यवस्था भी साथ में हो गई। लगभग 1000 अधिकारी व कर्मचारी वहां मतदान प्रक्रिया में अपना कर्तव्य निभाने आये थे। वहां विद्यालयों और गेस्ट हाउस में लोगों के ठहरने की व्यवस्था थी। रजाई गद्दे तो साफ सुथरे थे लेकिन एक विद्यालय में 20 से 60 के लगभग लोगों के लिए सुबह नित्य-कर्म, स्नानघर/पानी की व्यवस्था में थोड़ी कमियां थी। खाने की व्यवस्था ठीक थी लेकिन किसी सामाजिक उत्सव की तरह खाने के लिए पंक्तियाँ थोड़ी लम्बी थी।

दिनांक 09.11.2022 को सुबह 10 बजे फिर प्रशिक्षण शुरू हुआ जिसमें मतदान के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का प्रशिक्षण तथा मतदान नियमों की जानकारी दी गई। उसके बाद प्रश्नोतरी की गई और शंकाओं का निवारण किया गया। बाकी समय में सहायक पीठासीन अधिकारी के साथ पूरे क्षेत्र का भ्रमण किया। अकेले भी सुबह की सैर के दौरान विभिन्न ठहरने की जगहों का भ्रमण किया। मैंने वहां की सबसे ऊँची चोटी पर बने शिव मन्दिर व नीचे बने माता के मंदिर के दर्शन भी किये। सहायक पीठासीन अधिकारी के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा व घूमने में अच्छा समय बीता।

वहीं पर मतदान केंद्र के लिए अधिकारियों की नियुक्ति के लिए अन्तिम सूची बनाई गई। मेरे साथ में नियुक्त सहायक पीठासीन अधिकारी को भी अंतिम समय पर बदल दिया गया था। अगले दिन दिनांक 10.11.2022 को हमें मतदान के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरण (ई.वी.एम). लेने थे और निर्धारित मतदान केन्द्रों पर जाना था। ई.वी.एम. लेने के लिए तीन ही काउंटर थे और लगभग 150 दलों को ई.वी.एम लेनी थी। अन्य मतदान सामग्री के लिए अलग से काउंटर लगे हुए थे। ई. वी.एम. तथा अन्य मतदान सामग्री लेने के लिए लाइन और जाँच व गणना करने की इस पूरी प्रक्रिया में दो घन्टे के लगभग समय लगा। उसके पश्चात मैं और दो सुरक्षा कर्मी व तीन मतदान अधिकारी निर्धारित बस में बैठ गए। बस में लगभग 6 मतदान केंद्रों के दल थे। बस लगभग दोपहर एक बजे अपने गन्तव्य के लिए रवाना हुई। रास्ते में सुंदर झरने व दृश्यों ने मन मोह लिया। सभी मतदान केन्द्रों पर दलों को छोड़ते हुए हम लगभग 5 बजे अपने मतदान केंद्र पर पहुंचे । वहां एक प्राथमिक विद्यालय में मतदान केंद्र था। रहने की कोई व्यवस्था वहां नहीं थी। बी.एल.ओ द्वारा जैसे तैसे रहने की व्यवस्था की गई ।

अगले दिन दिनांक 11.11.2022 को हमें मतदान केंद्र और मतदान सामग्री तैयार करनी थी। मैं पहली बार यह कार्य कर रहा था। अपितु एक-एक प्रपत्र को बड़ी सावधानी से पढ़कर, समझकर तैयार किया गया। कुल मिलाकर इतने प्रपत्र थे कि पढ़ते, लिखते और समझते कब सुबह से शाम हो गई, पता ही नहीं चला । रात को नींद भी ठीक से नहीं आई क्योंकि सुबह छह बजे पूरी तैयारी के साथ, हमें मतदान केंद्र पर पहुंचना था और वास्तविक मतदान से पहले ई.वी.एम की जाँच के लिए विभिन्न दलों के प्रतिनिधियों द्वारा दिखावटी मतदान किया जाना था।

अगले दिन दिनांक 12.11.2022 को हम सुबह छह बजे मतदान केंद्र पर पहुँच गये और मतदान उपक्रमों को स्विच ऑन करके विभिन्न दलों के प्रतिनिधियों को दिखाया गया और दिखावटी मतदान आरम्भ किया गया। दिखावटी मतदान से सभी दलों के प्रतिनिधियों के संतुष्ट होने पर सभी दलों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर लिए गये और चुनाव मशीनों को सील किया गया।

सुरक्षा कर्मियों को दिशानिर्देश दिए गए कि सभी मोबाइल मतदान केंद्र के बाहर रख लिए जाए और सभी को पंक्ति में एक-एक करके मतदान केंद्र के अन्दर प्रवेश दें। सभी मतदान अधिकारियों ने अपने-अपने स्थान पर कार्यभार संभाला। मुझे पीठासीन अधिकारी के रूप में मतदान केंद्र की व्यवस्था देखना था। मतदाताओं और मतदान अधिकारियों की समस्या का समाधान करना, विभिन्न दलों द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों को पहचान पत्र जारी करना, सुरक्षा कर्मियों को निर्देश देना तथा बाकी सभी कागजी कार्य मेरे द्वारा ही किए जाने थे।

ठीक सुबह 8 बजे मतदान प्रारम्भ किया गया। यह एक अतिव्यस्त दिन था। पूरा दिन मतदान सम्बन्धी गतिविधियों से परिपूर्ण था। प्रशिक्षण में सभी चीजों को समझने की जिज्ञासा के कारण सभी कार्य आसानी से निपट गये। मतदान शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। ठीक शाम 5 बजकर 30 मिनट पर मैंने मतदान बंद करने की घोषणा की। उसके बाद सभी मतदान उपकरणों को सभी दलों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर सहित सील किया गया। उसके पश्च्यात एक से डेढ़ घन्टे में हमने सभी प्रपत्र भरने, हस्ताक्षर व सील करने की प्रक्रिया को पूरा किया। कुछ समय गांव के युवाओं के साथ चर्चा भी की और विभिन्न मुद्दों पर जानकारी ली।

लगभग रात साढ़े आठ-नौ बजे हमें वापस निर्वाचन क्षेत्र में ले जाने के लिए बस आई। लगभग रात ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे हम वापस निर्वाचन क्षेत्र पहुचें। मतदान उपकरण और सामग्री जमा करने के लिए लम्बी-लम्बी लाइने थीं। सामान जमा करते-करते दो बज गये। उसके पश्चात् मुझे यानि पीठासीन अधिकारी को कार्य मुक्ति के आदेश मिल गए । उसके बाद मैंने भी अपने अधीन तीन मतदान अधिकारियों को और एक सुरक्षा कर्मी को कार्य मुक्ति के आदेश दे दिए। खाने की व्यवस्था पूरी रात चालू रही। उसके पश्चात् हमने थोड़ा सा खाना खाया। उसके पश्चात मैं सोने चला गया लेकिन नींद नहीं आई। तड़के सुबह कुछ मतदान अधिकारियों के साथ उनके निजी वाहन से हम वापस अपने-अपने घर पहुँच गए ।

मतदान उपकरणों (ई.वी.एम.) में एक मतदान डालने में काफी समय लगता है। एक लम्बे समय के बाद बीप की आवाज आती है। कई बार तो मतदाता के मतदान कर चले जाने के बाद बीप की आवाज सुनाई देती है। इससे एक असमंजस की स्थिति बनती है कि मत का उपयोग हुआ या नहीं। अगर इस समय को थोड़ा सा कम कर दिया जाये तो उतने ही समय में ज्यादा मत डाले जा सकते हैं और बीप सुनने से मतदाता भी निश्चिंत हो जाता है कि उसके द्वारा मतदान किया गया।

मतदान लोकतंत्र की स्थापना का सबसे मजबूत स्तम्भ है। सही मतदान के द्वारा ही हम देश की बागडोर कुशल और मजबूत हाथों में सौंप सकते हैं। मतदान करके हम अपनी पसंद का उम्मीदवार चुन सकते है। लेकिन अपने काम, व्यापार या नौकरी के कारण दूसरे शहरों में रहने वाले सभी लोग अपने मत का प्रयोग नहीं कर पाते। आज डाक द्वारा बैलट पेपर सभी को नहीं मिल पाता। एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए लम्बी छुट्टी और काफी खर्चा लगता है। इसीलिए बहुत से लोग मतदान नहीं कर पाते। हिमाचल के विधानसभा चुनाव 2022 में लगभग 76 प्रतिशत मतदान हुआ। आज तकनीक बहुत विकसित हो चुकी है। अपितु कोई न कोई ऐसा हल निकालना चाहिए ताकि सभी लोग अपने मतदान का प्रयोग कर सके और दूसरे शहर से अपने क्षेत्र के प्रत्याशी को मतदान कर सके।

ये पांच दिन की अवधि का समय अति व्यस्त था, जिसमें मैंने भारतीय मतदान महोत्सव का हिस्सा बनकर एक नया अनुभव प्राप्त किया था। मैं और मेरी टीम ने पूरी निष्ठा, लगन और मेहनत के साथ कार्य किया और हम अपने कार्य को बिना किसी विशेष समस्या के ठीक तरीके से सम्पन्न करने में सफल रहे । मुझे और मेरी टीम को गर्व है कि हमने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए जनता की सरकार चुनने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

किन्नौर- दर्शन

सूरज नेगी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भगवान ने इस धरती को अद्भुत खूबसूरती दी है। हमारे देश भारत में उत्तर-पूर्वी भाग अपने ऐसी ही सौंदर्य के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। मेरा यह सौभाग्य है कि मैं हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में जन्मी हूँ और मैं आपको किन्नौर के दर्शन करवाती हूँ।

जिला किन्नौर हिमाचल प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित है। इस का मुख्यालय रिकांग पिओ है। यह राजधानी शिमला से लगभग 235 कि.मी. दूर है। जैसे ही हम किन्नौर (चौरा) में प्रवेश करते हैं तो कुछ किलोमीटर दूरी पर तरांडा ढांक आता है जो कि ढाई किलोमीटर लम्बी चट्टानों को हैंडटूल्स से काट कर बनाई गई है। यह देश की पहली ऐसी सड़क है जिसे बनाने में किसी मशीन का उपयोग नहीं किया गया है। ये सड़क पचास के दशक में बन कर तैयार हुई थी। आज तक ये रोड कभी बंद नहीं हुई है।

जैसे-जैसे हम किन्नौर की ओर बढ़ते हैं, रास्ते में पहाड़ों और जंगलों के बीच कलकल ध्वनि से बहती सतलुज और स्पीती नदियों का संगीत यहाँ की सुन्दरता में चार चाँद लगा देता है। स्पीती नदी आगे चल कर खाब में सतलुज से मिल जाती है। यह हरे-भरे, बड़े-बड़े देवदार के वृक्ष, बागीचों, ढलान खेतों और बस्तियों से ढकी हुई है।

हिम-प्रभा

प्रभु शिव जी का धाम किन्नौर-कैलाश तिब्बत सीमा के समीप एक पर्वत है, जो समुद्र तल से 6050 मीटर (लगभग 24000 फीट) की ऊंचाई पर है। इसकी चोटी पर एक प्राकृतिक चट्टान का शिवलिंग है। ये शिवलिंग दिन में कई बार रंग बदलता रहता है। इस दृश्य को आप कल्पा पिओ से देख सकते है।

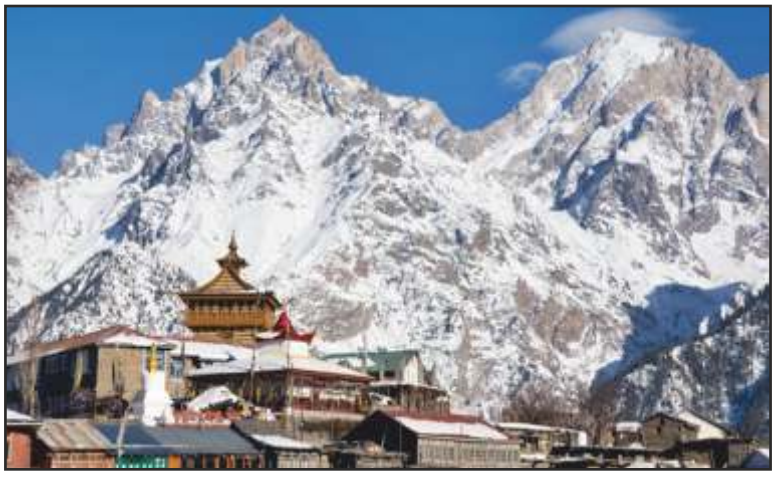

यहाँ पर फसलों में चावल, गेहूं, ओगला, फाफरा, जौ, मक्का, कंगनी (कोनी), कोदो और चौलाई (बाथू), की खेती की जाती है, जो मोटे अनाज की श्रेणी में आता है। खानपान की दृष्टि से यह एक समृद्ध क्षेत्र माना जा सकता है। जिसकी चमक यहाँ के जनवासियों के चेहरे पर साफ झलकती है।

फलों में सेब, नाशपाती, खुमानी, प्लम, आड़ू, चेरी, अंगूर, बादाम, स्ट्रॉबेरी और मसालों में काला जीरा की खेती की जाती है । काला जीरा यहाँ का एक विलक्षण मसाला है, जिसमें पोषक तत्वों की भरपूर मात्रा पाई जाती है। यह स्वास्थ्य सम्बन्धी कई समस्याओं को रोकता है।

यहाँ के देवदार जंगलों में बर्फ पड़ने के बाद (बसंत ऋतु में) प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाली गुच्छी पाई जाती है। आपको बता दूं कि गुच्छी को दुनिया की सबसे महंगी सब्जियों में गिना जाता है। कहते है कि इसे मौसम में एक बार जरुर खाना चाहिए। यह कई औषधीय गुणों से भरपूर एवं मल्टी विटामिन युक्त सब्जी है। यह हृदय रोग और मधुमेह रोग सहित स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को रोकता है।

किन्नौर में खूबसूरत गाँव और प्राकृतिक सौन्दर्य देखने को मिलता है। यहाँ का माहौल शांत है जहाँ आप किसी भी मौसम में घूमने के लिए जा सकते है, परन्तु यातायात

की दृष्टि से बसंत और गर्मी के मौसम में जाना ज्यादा अच्छा रहता है। किन्नौर में लोकप्रिय पर्यटन स्थल भावा वैली, सांगला, कामरू फोर्ट छितकुल, कल्पा, पिओ, नाको झील और लाबरंग (फोर्ट) है। छितकुल गाँव हमारे देश की आखिरी सीमा है जिसके बाद चीन की सीमा प्रारंभ हो जाती है।

किन्नौर की अपनी समृद्ध संस्कृति, रीति-रिवाज, त्यौहार, वेशभूषा व पहनावा है जिसके कारण इसकी अपनी अलग ही पहचान है। किन्नौर अपने खूबसूरत मंदिरों और मठों के लिए मशहूर है। स्थानीय लोगों द्वारा देवी देवताओं की पूजा के लिए ऊँची पहाड़ियों, कैलाश पर्वत के आंचल से ब्रह्मकमल तथा धूप लाया जाता है।

किन्नौर में समयानुसार ऐतिहासिक विशु, डखरेंन और फुल्याच मेले पहले की तरह ''सनतंग'' (मंदिर के प्रांगण) में मनाए जाते है। जब महिलाएं (दोह्डू, ऊनी चोली, ऊनी पट्टू, ऊनी लिङ्.चे कमर में गाची और सिर पर हरी टोपी आभूषण/गहने जैसे तोह चानंग, चंदर हार, बेश्टर, गऊ, गुर शांगलांग, कांटे बित्री) इस परिधान में नृत्य करते है तो यह दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है। यहाँ का लोक-नृत्य विश्व विख्यात है जिसे कयांग (नाटी) कहते हैं।

वर्तमान समय में पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के कारण किन्नौर में बहुत बदलाव आया है। आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे है, जिससे किन्नौर भी अछूता नहीं है। किन्नौर में प्रकृति की विषम परिस्थितियों के बाबजूद अपनी विशिष्ट संस्कृति, समृद्धि के साथ-साथ आर्थिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है और सभी विकटताओं के बावजूद अपनी विशिष्टता को अक्षुण्ण रखे हुए है।

माता-पिता के कर्ज को चुकाऊँ कैसे ?

सोनिया शर्मा
एम.टी.एस.

माता-पिता के कर्ज को मैं चुकाऊँ कैसे ?
जीवन में उनके उपकार को उतारूँ कैसे ?

जन्म से लेकर हर एक पल को,
खुशियों से भर दिया है जिन्होंने...
जीवन में कभी दुःख न आए,
इसलिए, अपना जीवन दाँव पे लगाया जिन्होंने...

उनके इस एहसान को लौटाऊँ कैसे ?
माता-पिता के कर्ज को चुकाऊँ कैसे ?
अच्छाई-बुराई का पाठ पढाया है,
जीवन जीने की कला सिखाई जिन्होंने

हर कदम पर सफलता का मंत्र दिया है,
असफलता से निराश कभी न होने दिया जिन्होंने....
इनके इस कर्तव्य परायणता को बताऊँ कैसे ?
माता-पिता के इस कर्ज को चुकाऊँ कैसे ?
जीवन में उनके इतने उपकार को उतारूँ कैसे ?

माता-पिता ने हर कदम पर खुशियाँ दी,
माता-पिता के इस कर्ज को उतारूँ कैसे ?

जी-20 सम्मेलन

प्रभात कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

जी-20 के 18वें शिखर सम्मेलन का आयोजन इस वर्ष नई दिल्ली में 09 सितंबर से 10 सितंबर को हुआ। दुनियाभर से सदस्य देशों के राष्ट्र प्रमुख और प्रतिनिधि इस सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए भारत आए। भारत ने पहली बार इस सम्मेलन की मेजबानी की। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जी-20 में हिस्सा ले रहे देशों के सुझावों, प्रस्तावों और विचारों पर चर्चा करने के लिए नवंबर से पहले एक वर्चुअल सेशन की पेशकश के साथ सम्मेलन के समापन का एलान कर दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ब्राजील के औपचारिक रूप से जी-20 देशों की अध्यक्षता लेने से पहले भारत के पास ढाई महीने का समय है और इसमें इन सुझावों पर विचार किया जा सकता है।

उन्होंने 'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर' के रोड-मैप के सुखद होने की कामना के साथ सम्मेलन में हिस्सा ले रहे देशों को धन्यवाद दिया। इस दौरान उन्होंने संस्कृत का एक श्लोक भी कहा, जिसका संबंध दुनिया में शांति और खुशी की कामना से है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन समेत दुनिया भर से जुटे कई नेताओं ने भारत की अध्यक्षता की सराहना की। सम्मेलन में कुल तीन सत्र हुए। दो सत्र (वन अर्थ और वन फैमिली) 09 सितंबर और एक सत्र (वन फ्यूचर) का आयोजन 10 सितंबर को हुआ। ये सम्मेलन अफ्रीकन यूनियन को स्थायी सदस्यता दिए जाने के लिए भी याद किया जाएगा। जी-20 सम्मेलन के घोषणापत्र पर आम सहमति को भारत और पीएम नरेंद्र मोदी की सफलता के तौर पर देखा जा रहा है।

जी-20 समूह का मुख्य उद्देश्य दुनिया में वित्तीय स्थिरता और सतत विकास को बढ़ावा देना है।

हालांकि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस बार सम्मेलन में शामिल नहीं हुए। उनकी जगह उनके प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बैठक में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक चुनौतियां, रूस-यूक्रेन युद्ध, स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन और गरीबी जैसे मुद्दे पर भी बहस हुई ।

जी20 ग्रुप में 19 देश शामिल हैं- अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, रिपब्लिक ऑफ कोरिया, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका। हर साल एक रोटेशनल सिस्टम के तहत सदस्य देशों को सम्मेलन की मेजबानी का अवसर मिलता है।

हर साल मेजबान देश जी-20 की बैठकों का आयोजन करते हैं। एक थीम के तहत बैठकें होती हैं और कई महत्वकांक्षी लक्ष्य तय किए जाते हैं। साल 2008 से लेकर साल 2022 तक जी-20 की अब तक 17 बैठकें हुई थी ।

जी-20 की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि साल 2008 के आर्थिक संकट को मैनेज करना था। तब आर्थिक संकट को काबू करने में इस समूह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वहीं जी-20 ने आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक में कुछ सार्थक बदलाव भी किए ।

जी-20 की बहुत ज्यादा उपलब्धियां तो आपको नहीं मिलेंगी ऐसा लगता है कि जी-20 का गठन ही अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इसके गठन ने दर्शाया कि दुनिया की आर्थिक व्यवस्था में तेजी से बदलाव हो रहा है। जैसे पहले जी-7 या जी-8 समूह बड़े वैश्विक आर्थिक मसलों पर फैसला ले लिया करते थे...लेकिन जब आर्थिक व्यवस्था बदलने लगी और 2008 की आर्थिक मंदी के दौरान इन देशों को एहसास हुआ कि उनका यानी पश्चिमी देशों का दबदबा अब उतना प्रभावी नहीं रहा कि जो आर्थिक विषमताएं आ रही थीं उनसे निपट सके तब उन्होंने इस फोरम को बनाया ताकि उभरती हुई ताकतों को भी इसमें शामिल किया जा सके, उन्हें आर्थिक फैसलों का हिस्सा बनाया जा सके।

लेकिन चीन और रूस के राष्ट्रपति का इस तरह जी-20 की बैठक से खुद को दूर करना क्या जी-20 की प्रासंगिकता पर सवालिया निशान खड़ा करता है? केवल जी-20 ही एक ऐसा समूह है जो काम कर रहा है। जिसकी बीते एक साल की सभी बैठकें पूरी हुई हैं। जिसमें विकसित और विकासशील देश दोनों साथ आ रहे हैं। चीन-रूस के प्रमुख भले न हिस्सा ले रहे हों लेकिन उनके प्रतिनिधि भारत आए। इसलिए इसे एक अलग नजरिए से भी देखा जा सकता है।

ऊपर-ऊपर देखें तो जी-20 की बैठक में आपको खूब तड़क-भड़क नजर आएगी। सजावट, 20 बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों के प्रमुखों का जुटना, एजेंडा तय करना। लेकिन गहराई से देखें तो अभी तक जी-20 से कुछ भी हासिल नहीं हुआ है और जलवायु परिवर्तन जैसे मसले हैं जिन पर पेरिस समझौते के बाद भी कुछ नहीं हुआ। जी-20 के सदस्यों पर कोई बाध्यता नहीं है कि वो जी-20 के मंच पर किए अपने वादों को निभाएं ही। वहीं जी-20 के पास भी ऐसा कोई साधन नहीं है, जिसके तहत इन वादों को लागू करने के लिए कुछ किया जा सके।

जी 20 ने एक बड़े टैक्स सुधार का समर्थन किया जिसमें प्रत्येक देश के लिए कम से कम 15 प्रतिशत का वैश्विक न्यूनतम कर शामिल था। इसने नए नियमों का भी समर्थन किया जिसके तहत अमेजन जैसे बड़े वैश्विक व्यवसायों को उन देशों में कर का भुगतान करना होगा जहां उनके उत्पाद बेचे जाते हैं, भले ही वहां उनके कार्यालय न हों। ग्लोबल टैक्स एग्रीमेंट एक बड़ा कदम है लेकिन अब तक ये लागू नहीं हुआ ।

कब-कब और कहां-कहां हुए सम्मेलन ?

साल 1999 से जी-20 की बैठकें हो रही हैं लेकिन तब इनमें सदस्य देशों के वित्त मंत्री और सेंट्रल बैंक के गवर्नर हिस्सा लेते थे। एशिया में आर्थिक संकट के दौरान इन्हीं ने मिलकर

जी-20 का गठन किया था, इस सोच के साथ कि ग्लोबल इकनोमिक और फाइनैंशियल मुद्दों पर चर्चा की जा सके पर साल 2007-08 में आए वैश्विक आर्थिक मंदी के बाद जी-20 की तस्वीर बदल गई।

साल 2008, अमेरिका – पहली बार जी-20 के सदस्य देशों की बैठक अमेरिका के वाशिंगटन शहर में आयोजित की गई। दुनिया तब वैश्विक आर्थिक संकट से जूझ रही थी। अमेरिका के दो प्रमुख बैंक दिवालिया हो गए थे। दुनिया के बिगड़ते आर्थिक हालातों को देखते हुए तय हुआ कि अब जी-20 की बैठक में सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों की जगह हेड ऑफ स्टेट यानी सदस्य देशों के प्रमुख इसमें हिस्सा लेंगे। इस सम्मेलन को 'वित्तीय बाजार और विश्व अर्थव्यवस्था पर शिखर सम्मेलन' कहा गया। राष्ट्रों के शीर्ष नेताओं के अलावा आईएमएफ, वर्ल्ड बैंक और यूनाइटेड नेशन के प्रमुख और स्पेन, नीदरलैंड्स भी इसमें शामिल हुए। सम्मेलन के दौरान आर्थिक सुधारों से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा हुई सभी प्रमुख इस बात पर सहमत हुए कि वैश्विक वित्तीय बाजारों में सुधार के लिए समान सिद्धांत होने चाहिए और उन सिद्धांतों को लागू करने के लिए एक कार्य योजना शुरू करना चाहिए। सदस्य देशों ने व्यापार और निवेश पर 12 महीनों के लिए नई बंदिशें लगाने से परहेज करने पर सहमति व्यक्त की।

साल 2008, वाशिंगटन : जी-20 सदस्य देशों के प्रमुखों की पहली बैठक।

साल 2009, ब्रिटेन – लंदन में एक साल बाद हुए सम्मेलन को फॉलो-अप बैठक की तरह देखा गया। बैठक का एजेंडा 'वैश्विक आर्थिक संकट' ही था। इस बैठक में सदस्य देशों ने विकासशील देशों और उभरते बाजारों के विकास के लिए आईएमएफ के ऋण संसाधनों को बढ़ाकर 750 अरब डॉलर करने का वादा किया। जी-20 ने इस सम्मेलन में उन देशों को ब्लैकलिस्ट करने पर सहमति जताई, जिन्होंने कर चोरी से निपटने के प्रयासों में सहयोग करने से इनकार या परहेज कर दिया था ।

साल 2009, अमेरिका – लंदन में हुई बैठक के तुरंत बाद अमेरिका के पीटर्सबर्ग में इस बैठक की योजना बनाई गई। इसी समिट में जी-20 को आधिकारिक तौर पर ''अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच'' के रूप में परिभाषित किया गया ।

साल 2010, कनाडा – टोरोंटो में हुई इस बैठक में जी-20 देशों ने ये माना कि साल 2008 की आर्थिक मंदी के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति नाजुक और अस्थिर हो गई है। सभी मजबूत अर्थव्यवस्था वाले देशों ने अपने बजट घाटे और बाहरी उधार में कमी लाने का वादा किया। इसी साल दक्षिण कोरिया के सियोल में भी जी-20 की एक बैठक बुलाई गई। ये पहली बार था जब जी-8 देशों के इतर किसी देश को जी-20 की मेजबानी मिली थी। पहली बार 'विकास नीति का मुद्दा' शिखर सम्मेलन के एजेंडे में शामिल किया गया और तभी से डेवलपमेंट जी-20 के हर वार्षिक सम्मेलन का हिस्सा है।

साल 2011, फ्रांस- कान्स में तीन और चार नवंबर के बीच जी-20 की बैठक हुई। सम्मेलन के केंद्र में आईएमएफ यानी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में सुधार का मुद्दा रहा। कृषि बाजार सूचना प्रणाली (एएमआईएस) की स्थापना शिखर सम्मेलन के प्रमुख परिणामों में से एक थी। एएमआईएस को कृषि के अतंर्राष्ट्रीय बाजार में और पारदर्शिता लाने के लिए शुरू किया गया था।

साल 2012, मेक्सिको – लोस काबोस में हुए सम्मेलन की चर्चा का केंद्र युवाओं की बेरोजगारी, सामाजिक सुरक्षा कवरेज और उचित आय के साथ गुणवत्तापूर्वक नौकरियां पैदा करना था। साथ ही विकास, कृषि और हरित विकास भी एजेंडा में शामिल थे।

साल 2013, रूस – सेंट पीटर्सबर्ग में टैक्स चोरी से निपटने के मामलों में बड़ी प्रगति हुई. जी20 इस पर सहमत हुआ कि टैक्स से जुड़ी सूचना का स्वचालित आदान-प्रदान और बेस इरोसन और प्रॉफिट शिफ्टिंग पर कार्य योजना बनाई जाएगी।

साल 2014, ऑस्ट्रेलिया – ब्रिसबेन में नेताओं ने तय किया कि जी 20 देशों की कलेक्टिव जीडीपी को दो प्रतिशत से बढ़ाया जाए। इस साल 2025 तक लेबर वर्कफोर्स में जेंडर गैप को 25 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य रखा गया। पीएम नरेंद्र मोदी ने सम्मेलन के समापन के दौरान ब्राजील के राष्ट्रपति लुईस ईनास्यू लूला डा सिल्वा को जी 20 समूह की अध्यक्षता सौंप दी। इसके प्रतीक के तौर पर उन्हें पीएम मोदी ने गैवल (हथौड़ा) पेश किया।

साल 2015, तुर्की – बैठक के इस संस्करण में पहली बार जी 20 सदस्य देशों ने प्रवासन और शरणार्थी संकट पर ध्यान केंद्रित किया। इसके अलावा वित्तीय क्षेत्र में सुधार और जलवायु परिवर्तन से निपटने की योजनाओं के समर्थन पर भी सहमति हुई। इस में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई पर एक बयान भी जारी किया गया ।

साल 2016, चीन – सम्मेलन के दौरान हांगझोऊ में दो प्रमुख चीजें हुईं। डिजिटल इकोनॉमी को पहली बार जी-20 के एजेंडे में शामिल किया गया। दूसरा, सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा पर जी 20 कार्य योजना को अपनाया गया ।

साल 2017, जर्मनी – बैठक 7 और 8 जुलाई को जर्मनी के हैम्बर्ग में हुई। शिखर सम्मेलन के दौरान, आतंकवाद विरोधी विषय पर विशेष जोर दिया गया। शिखर सम्मेलन के अंत में जारी साझा घोषणा में पेरिस समझौते के महत्व को दोहराया गया।

साल 2018, अर्जेंटीना – ब्यूनस आयर्स में जुटे नेताओं ने तीन मुख्य संदेश दिए। सबसे पहले उन्होंने सतत विकास के लिए यूएन एजेंडा 2030 को अपने समर्थन की पुष्टि की। जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों को तेज करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। तीसरा, जी 20 नेताओं ने व्यापार के लिए बहुपक्षीय दृष्टिकोण और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सुधार के महत्व को पहचाना और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दृढ़ किया ।

साल 2019, जापान – ओसाका में नेताओं ने आतंकवाद को लेकर इंटरनेट के इस्तेमाल पर ध्यान केंद्रित किया। जी-20 ने ऑनलाइन प्लेटफार्मों से आतंकवाद और आतंकवाद के लिए अनुकूल हिंसक उग्रवाद को बढ़ावा नहीं देने और ऐसी सामग्री को स्ट्रीम करने, अपलोड करने से रोकने का आग्रह किया।

साल 2020, सऊदी अरब – ये पहला वर्चुअल समिट था। 21 नवंबर और 22 नवंबर को सऊदी अरब में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन को कोविड महामारी के कारण वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित किया गया। नेताओं ने महामारी पर काबू पाने, विकास को पटरी पर लाने और अधिक समावेशी भविष्य बनाने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया ।

साल 2021, इटली – रोम में जी-20 की 16वीं बैठक में सदस्य देशों के प्रमुख ने जलवायु परिवर्तन के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखने की प्रतिबद्धता दिखाई। ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री तक सीमित करने का लक्ष्य रखा गया। वहीं नेताओं ने सदी के मध्य तक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को नेट जीरो तक पहुंचाने का प्रण लिया।

साल 2022, इंडोनेशिया – ये कोविड महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद पहला जी-20 सम्मेलन था। देश की राजधानी बाली में हुए सम्मेलन में महामारी के बाद स्वास्थ्य से जुड़े वैश्विक समाधानों और अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने को लेकर चर्चा हुई, साथ ही रूस-यूक्रेन युद्ध भी इसके प्रमुख एजेंडे में शामिल रहा।

जी-20 सम्मेलन के अगले शिखर सम्मेलन का आयोजन ब्राजील में किया जाएगा ।

हिमाचल प्रदेश के स्थानीय कवि श्री अजेय द्वारा
''हिम-प्रभा'' अंक 91-92वें का विमोचन

हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2022 के समापन समारोह में पधारे
मुख्य अतिथि 'कवि श्री अजेय' को स्मृति-चिन्ह भेंट करते हुए

15 अगस्त की कुछ झलकियां

26 जनवरी की कुछ झलकियां

आत्मनिर्भर भारत और पैसा

दया सागर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पैसे से सब काम होते
पैसे से बनती औकात
पैसे से सुविधाएँ मिलती
बनती इससे बिगड़ी बात
मनुष्य के पैदा होते ही
हो जाती शुरुआत
जाति-धर्म की राजनीति में
ये कितनी अद्भुत बात
पैसे का न धर्म पूछते
न पैसे की जात
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

पैसे के सब पीछे जाते
फिर भी कीमत कम बताते
दिल के अन्दर हाय पैसा
मुख से बोले मैल जैसा
उधार मांगकर नहीं लौटाते
झूठे मूठे बहाने बनाते
करते हैं सिर्फ अच्छी बात
नहीं देते कभी भी साथ
पैसे से ही जुड़े हुए हैं
उनके सभी जज्बात
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

बाबा बोले, लोगों जागो
पैसे के पीछे कभी न भागो
दुःख का कारण इसको त्यागो
मुझको दे दो, मैं रख लूँगा
तुम्हारे सारे दुःख हर लूँगा
बंगला, गाड़ी सब माया है
इनको कर दो दान
दान मांगकर मौज ये करते
बाँट रहे बस ज्ञान
कि पैसा नहीं जायेगा साथ
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

पैसा फेंक तमाशा देख
मूल-मंत्र राजनीति का
सांसद, विधायक पैसा बहाते
पैसे से सरकार बनाते
पैसा है तो पावर है
पर कहते, करनी है सेवा
जनता को भगवान बताते
फिर खाते, ये मेवा
सेवा करोगे मेवा मिलेगा
बस कहते हैं यहीं बात
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

डॉक्टर बनने के सपने बुनते
लाखों लगाकर डॉक्टर बनते
रात दिन फिर करते पढ़ाई
करने को पुण्य की कमाई
फिर वो भी बन जाते उस्ताद
पैसे दो फिर होगा इलाज
भूल गये सब कसमें वादे
चतुर बन गए, सीधे-साधे
सेवा अब बना व्यापार
पैसे से है सबको प्यार
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

न्याय के लिए भी पैसा चाहिए
न्याय चाहिए तो वकील लगाईये
बिना वकील के कुछ नहीं सुनते
मनमर्जी से दंड लगाते
कानून का करते दुरूपयोग
जबरदस्ती बनाते ये अभियोग
अंत में वकील का चाहिए साथ
न्यायालय में रखने को बात
तारीख पर मिलती तारीख
आ जाते देवता सब याद
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

गरीबों को सुविधाएँ देता
पैसेवाला करता दान
पैसेवाला धर्मशाला बनाता
करने को विश्राम
पैसेवाला लंगर लगाता
भूखों को वो अन्न खिलाता
पैसेवाला रोजगार देता
मिले जिससे सम्मान
पैसेवाले देते साथ
निठ्ठले करते बात
लोग फिर भी बता रहें
पैसे की क्या औकात

अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन
ये सबका अधिकार है
अच्छे कपड़े, अच्छा घर
जीवन बने इनसे सुन्दर
मेहनत करो और पैसा कमाओ
जीवन सफल बनाओ
अभाव में मत जियो तुम
गरीबी को तुम दूर भगाओ
देश के विकास में हाथ बंटाकर
जीवन सुखी बनाओ
खुद भी बनो आत्म-निर्भर
आत्म-निर्भर भारत बनाओ

मेहनत का पैसा, नहीं है माया
इसने ही संसार चलाया
पैसे का सम्मान करो
अच्छे इससे काम करो
पैसे को न गलत बताओ
बस उद्देश्य सही अपनाओ
कठिन है निर्धन का जीवन
पर जीना वो फकीरी है
नहीं पैसे से सब कुछ मिलता
पर पैसा बहुत जरुरी है
पैसा आत्मनिर्भर बनाता
ये पैसे की ही खूबी है

आँगन

श्रुति
कनिष्ठ अनुवादक

एक पीला कनेर, चहचहाते पक्षी, कनेर के घने पत्तों से छन कर आती धूप, गीत गाती सरसराती हवा, ये सजावट है मेरे आँगन की। कनेर की डाल से झूलते झूले पर कभी बच्चे तो कभी पक्षी तो कभी पगली हवा झूल रही है। हवा के झोंके न केवल बच्चों को परंतु बड़ों को भी आतुर कर रहा आँगन की ओर कूच करने को। आँगन के कोने में रखे सिलबट्टे पर माँ के रगड़ने की आवाज से रोज सुबह नींद टूटती है। ऊँघते हुए बंद आँखों से आँगन में ही कदम पड़ते हैं, मानो पैरों की भी आँखें हों। जाड़े में तो आँगन जीवनरेखा होता है, जब सभी खिलती धूप के हर कतरे को सोख लेना चाहते हैं। बारिश में न जाने कितनी कागज की कश्तियों पर बच्चों ने जान-प्राण लगाए होंगे कि कौन सी कश्ती बिना पलटे हुए दौड़ फतह कर ले। बारिश की बूँद से कश्ती में आए हिचकोले पर बच्चों का शोर और उनकी अटकी हुई साँसों को महसूस किया है आँगन ने।

शाम को दुल्हनों की महफिल लगती आँगन में जिसका रंग-राग 'किट्टी पार्टी' संस्कार का मुँह चिढ़ाते हैं। आँगन गवाह है कई जोड़ियों के ब्याह का; हिंदु संस्कारों का; श्राद्ध और जन्म संस्कार का; आलिंगन और विरह का; भाभी-बुआ की नोंक-झोंक का; दादा-दादी के जलपान का। न जाने कितने बच्चों को पाला है इस आँगन ने, कितने डॉक्टर-इंजीनियर-फौजी निकले इसी आँगन के कनेर की छाँव से, कितनी बेटियों की विदाई पर रोया है यह आँगन, बच्चे के जन्म पर सोहर गाया इस आँगन ने। न जाने कितने राज दफ्न हैं इसके सीने में। इसकी दीवारों के ओट में न जाने कितनी चुगलियाँ लगाई गईं। इसी आँगन की पंचायत में न जाने कितने सुलह हुए। विभिन्न व्यंजनों का स्वाद भी चखा है इस आँगन ने। बछड़ों से कई बार अनबन हुई है आँगन की और फटकार लगाई आँगन ने कि गोबर न कर मेरे ऊपर। आँगन की भावनाओं को आवाज देते हुए बच्चों ने अम्मा को आवाज लगाई और आँगन की सफाई करवाई।

देखा है इस आँगन ने तड़के सुबह बुहाड़ने निकली घूँघट काढ़े अलसाई बहू को। पुचकारा और सहलाया है इसने खुद पर गिरे शिशुओं को। चोट लगे बच्चे को शांत करने के लिए मार भी खाई है आँगन ने। फिर भी हँसता रहा। समेटता रहा हमारी खुशियों को स्मृति में। आज भी आँगन की दीवारों से टकरा कर गूँज रहे हैं ये शब्द ''माँ मेरी बारी कब आएगी, भईया से कहो मुझे भी झूलने दे।'' आज भी धड़कता हुआ साँस ले रहा है आँगन और अनवरत प्रतीक्षा कर रहा है अपने पालितों के आगमन का। आइए झाँके आँगन की फोटो गैलरी में।

बालगीत (कविता)

सुनील कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बात –बात में निकुंज पूछें,
ऐसे कठिन सवाल,
सोच सोच कर दादा जी भी,
मन में करें मलाल ,
आसमान ये ऊँचा क्यों हैं ?
गहरा क्यों ये कूप ?
कहो कहाँ से लाता सूरज,
इतनी सारी धूप ?
मुझे बताओ दिया भेड़ को,
किसने ऊनी शॉल ?
कौआ क्यों ककर्श बोंले,
क्यों कोयल मधुर जुबान ?
चिड़िया क्यों करने लग जाती,
कभी धूल में स्नान ?
क्यों विक्रम की पीठ चढ़ा वो,
शातिर सा बेताल ?
हुए गधे के सिर गायब,
कैसे उसके सींग
सीखी कहा से आपने ये,
हाँक रहे जो डींग
बिन बात क्यों आँसू बहाए
भोला सा घड़ियाल
निकुंज की बातों को सुन कर,
दादा जी थे मौन,
इन ऊलजलूल सवालों पर,
मगज खपाये कौन,
सीखी तुमने बात कहाँ से,
ये है बड़ा सवाल।

घुटनों के दर्द व आगामी शल्य चिकित्सा तक की वेदना यात्रा

सीमा सहोता
सहायक लेखा अधिकारी

लगभग वर्ष 2015 में लगातार ही घुटनों के दर्द के तत्व बोध ने मेरे निजि जीवन को प्रभावित करना आरंभ कर दिया था। परिणामस्वरुप शिमला नगर में स्थित नामवर निजि व सरकारी चिकित्सकों की मेरी समयबद्ध चिकित्सा परामर्श व इलाज यात्रा शुरु हो गया।

इलाज परामर्श दवाईयाँ चलती, बढ़ती, बदलती रही परंतु इस पथ में वांछित स्वास्थ लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा था। यहाँ तक चिकित्सीय परामर्श के अधीन अभीष्ट मात्रा में स्टेरॉयड भी लेना पड़ा जिसका कुछ समय तक लाभ दिखाई दिया।

वर्ष 2022 आते-आते लगभग सभी चिकित्सकों ने एकमत परामर्श स्वरुप यह निर्णय लिया कि दोनों घुटनों की अवस्था उस स्तर तक खराब हो चुकी है कि अब दोनों घुटनों की शल्य चिकित्सा ही एक मात्र इलाज है। इस अवस्था में सामान्य रुप से चलना तक एक दुष्कर कृत्य प्रतीत होने लगा।

इस कारण शरीर में अन्य अवसाद उत्पन्न होना भी स्वाभाविक प्रक्रिया है। घुटने ही तो हैं जो हमारे शरीर का भार वाहित कर हमें चलने-फिरने, दौड़ने, व्यायाम करने व दैनिक कार्य करने में उत्तरदायी है और इस अभाव में जो ये सब न हो पाए तो शारीरिक मेटाबॉलिज्म और हॉर्मोनल असंतुलन हो गए जिससे शारीरिक तथा मानसिक अवसाद, चिंताओं का बढ जाना बहुत स्वाभाविक था।

इस प्रकार इस वेदना के चलते अपनी इस मौजूदा घुटनों की स्थिति के कारण ऑपरेशन हेतु राज्य के ही नहीं अन्य राज्य के निजि व सरकारी चिकित्सालयों की खोज-बीन की प्रक्रिया पारिवारिक स्तर पर शुरु की जा चुकी थी। इस परिवेश में सभी पक्षों का मूल्यांकन कर 2022 के अंत में यह चुनाव कर लिया गया कि इस मुश्किल शल्य-चिकित्सा के लिए पंचकुला स्थित एक निजि चिकित्सालय एक उत्तम चुनाव है।

दिसंबर 2022 समाप्त होते-होते उक्त चिकित्सालय में बार-बार जा कर पूर्ण परीक्षण कार्य तथा भर्ती होने व शल्य चिकित्सा हेतु आगामी 24 जनवरी 2023 की तिथि सुनिश्चित कर दी गई। जनवरी 2023 और ऑपरेशन की अवधि के एक सप्ताह पूर्व से न केवल मुझे बल्कि मेरे पूरे परिवार जनों में चिंता विद्यमान होने लगी। अतः कार्यालय से विधिवत आगामी दो माह का अवकाश स्वीकृत करवाया जा चुका था।

इस बार शिमला से पंचकुला की यात्रा कुछ बोझिल सी प्रतीत हो रही थी। परिवार जन यद्यपि एक सी स्थिति में थे परंतु एक-दूसरे का उत्साह बढा कर स्वयं को सामान्य दिखाने का प्रयास कर रहे थे। निकट अवधि में ऑपरेशन की अनिश्चितता के पलों ने मेरे व सभी के मानसिक पटल पर चिंता की धुंध की गति बढ़ा दी। आगामी दिवस अब वह वक्त भी आ गया जब मुझे ऑपरेशन प्रक्रिया के लिए वार्ड से व्हील-चेयर पर ऑपरेशन थियेटर ले जाया जा रहा था। सच मानिए शरीर व मन इस घड़ी में शिथिल से प्रतीत हो रहे थे। आगामी दिवस अस्पताल में मुझे भर्ती कराया गया, सभी परीक्षण पुनः जाँच हेतु किए जा

रहे थे। ऑपरेशन थियेटर पहुँच कर सबसे पहले मेरी कमर में इंजैक्शन लगा कर मेरी टाँगों को सुन्न किया गया। अब ऑपरेशन शुरु हुआ मेरी टाँगे पूरी तरह सुन्न हो चुकी है, परन्तु ऑपरेशन के दौरान मस्तिष्क पूर्ण रूप से जागृत था। ऑपरेशन के दौरान होने वाली बातचीत व गतिविधियाँ मुझे सुनाई दे रही थी। सबसे पहले तो कटर मशीन की आवाजे आने लगी मुझे महसूस तो कुछ नहीं हो रहा था मुझे थोड़ी घबराहट हुई फिर मैंने सोचा कि यह ऑपरेशन की प्रकिया का ही हिस्सा है और मैनें अपने मन को शांत किया। ऑपरेशन लगभग 4 घण्टे चला उसके बाद मुझे आई.सी.यू. में ले जाया गया, जहाँ मेरे परिजनों को बारी-बारी से मुझसे मिलने दिया। वह सभी मुझे देखकर प्रसन्न व उत्साहित नजर आ रहे थे।

डॉक्टर साहब ने बताया कि सीमा जी आपका यह ऑपरेशन पूर्णतः सफल रहा है, आपको शुभकामनाएँ। उन्होंने यह भी कहा कि आगामी अभीष्ट स्वास्थ्य विश्राम चिकित्सीय दिशा-निर्देशों से आगामी पाँच-छः महीने में अपने पैरों पर सहज रुप से चल पाएंगी।

ऑपरेशन के अगले ही दिन फिजियोथिरेपी शुरु कर दी गयी। अगले आठ दिन के उपरांत मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। ऑपरेशन के 21 दिनों के पश्चात घुटनों के 50 टाँकें खोल दिए गए। पंचकुला में ही आगामी तीन माह का स्वास्थ्य लाभ व पुनर्वास प्रक्रिया तय थी। इसी के साथ ही समय बद्ध अवधि पर डॉक्टर का पुनः निरीक्षण, जाँच व परामर्श वांछित था। पुनर्वास की यह प्रक्रिया का लंबा क्रम मानसिक रुप से सहज तो न था।

शुरु-शुरु में तो थोड़ा हिलने-डुलने पर दर्द का जो अनुभव था बहुत विकट सा था परंतु धीरे-धीरे समय बीतने पर चिकित्सकों के संतोषप्रद परिणाम देख कर मुझे उनके उत्साहवर्धक शब्दों से सहजता ही शक्ति प्रदान होती रही साथ ही परिवारजनों की उल्लासपूर्ण टिप्पणियाँ, उनके सहजपन ने मुझमें नवीन आशा का संचार बहुत बढा दिया था। पहले एक महीने तक वॉकर के सहारे चलने के बाद छड़ी का प्रयोग आरंभ हुआ। धीरे-धीरे समयानुसार निज रुप से खड़े होने व चलने की प्रक्रिया में गति का विस्तार होने लगा। इस सबसे मेरे संकल्प व विश्वास का बढना स्वाभाविक था। चार माह पश्चात बिना सहारे के चलना प्रारंभ किया।

अंततोगत्वा आज लगभग पाँच माह उपरांत कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करने का समय आ गया। अपने उसी अनुभाग (ऋण व हिंदी कक्ष) में अपनी कुर्सी पर बैठते ही एक आनंदित सा भाव मन में तैर सा गया। भाव-विभोर मैंने दृष्टि दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे दौड़ाई आखिरकार सामान्य दिनचर्या पर लौट ही आई। तभी उस पल में आँखें भर आईं। ऐसे लगा, उन क्षणों में जैसे चारों दिशाओं में रमण करने वाले देवता को उनकी असीम अनुकम्पा के लिए मन, आत्मा व रोम-रोम धन्यवाद निवेदित कर रहा हो।

यह अश्रुपूर्ण अवस्था देख कर मेरे सहयोगी दीपा व श्रुति ने सहसा पूछा, ''मैडम, क्या हुआ ?'' मैंने सहज ही कहा, ''बस कुछ थकावट व दर्द सा अनुभव हुआ।'' उसी समय अन्य सहयोगी श्री सोमनाथ व श्री कुलदीप ने चाय व मिष्ठान सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया तो सहसा मुझे हँसी आ गई। कुलदीप जी बोल उठे मैडम, यह क्या। एक पल में अश्रु व दूसरे पल खिलखिलाती हँसी, कुछ समझ नहीं आ रहा। प्रथम अश्रु भाव प्रभु के अनुकम्पा में धन्यवाद स्वरुप अर्पित भाव व दूसरी खिलखिलाती हँसी अपने कार्य सहयोगियों के सत्कार, स्नेह के प्रतिफल स्वरुप धन्यवाद आभार भाव।

मन भर आया

सुनीता देवी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

क्या समय आया, तबाही देख
मेरा मन भर आया..... मेरा मन भर आया.....
बादलों ने तो इस साल चारों तरफ कहर ढ़ाया
फिर मौसम और मंहगाई ने डराया
इस प्रगति और स्मार्ट सिटी के चक्कर ने
सड़कों को कमजोर बनाया..
क्या समय आया, तबाही देख
मेरा मन भर आया.... मेरा मन भर आया....

कोई डरा मौसम से, तो कोई डरा मंहगाई से
ऐसा मंजर नहीं देखा था कभी भी
खिसक गए पहाड़ तो
किसी का सर, किसी का बाजू हाथ में आया
इस दुःख की घड़ी में, आपदा से कोई नहीं लड़ पाया
क्या समय आया, तबाही देख
मेरा मन भर आया..... मेरा मन भर आया.....

अच्छाई के लिए जानने वाले हिमाचल में
पर्यटकों को सौ रूपए का पानी, सौ रूपए का परांठा खिला कर
उनकी मजबूरी का खूब फायदा उठाया
ये मंजर देखकर बहुत गुस्सा आया
बस करो... पहाड़ों को पहाड़ ही रहने दो
इन पर पांच-पांच मंजिला बिल्डिंग बनाकर
पहाड़ों को बिल्डिंगों के बोझ से कमजोर बनाया
और आज इतना बड़ा नुकसान उठाया,
क्या समय आया.... क्या समय आया....
मेरा मन भर आया..... मेरा मन भर आया.....

जिन खोजा तिन पाया

पवन कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

विगत 25 वर्षों से जुड़े गुरु-शिष्य पद्धति के गुरु ज्ञानदेव अपने स्नेहवत शिष्य के घर दो दिन से विराजित थे। खान-पान से निपट कर एक कक्ष में दोनों अब इस पौष माह की शरद रात्रि में आध्यात्म पर वार्ता में लीन रहेंगे।

अभी वार्तालाप शुरु ही हुई थी कि शिष्य गुरुदास ने गुरु ज्ञानदेव से सहसा पूछ लिया, कि इन 25 वर्षों में उसने, उनके मार्गदर्शन व भक्ति का विधिवत् अनुसरण किया है क्या ?

गुरु ज्ञानदेव ने सहज वाणी से कहा, निश्चय ही गुरुदास तुम ने मन से इसका पूर्णतया अनुसरण किया है।

तब गुरुदास ने कहा, कि आपके उस वचन का क्या हुआ जो शिष्य बनाते समय आपने दिया था कि मेरे समर्पित व पूर्ण न्यौछावर भाव उपरान्त आप मुझे उस पूर्ण प्रभु में स्थित होने की युक्ति सूत्र का ज्ञान देंगे। वह हम दोनों में वचन था न गुरुजी !

गुरु ज्ञानदेव आज शिष्य की पुकार युक्त आग्रह से खोये से नजर आने लगें। चेहरे पर खिन्नता पढ़ी जा सकती थी। कुछ समय उपरान्त बोले गुरुदास इस युक्ति सूत्र से वे स्वयं भी अनभिज्ञ हैं।

दोनों पक्षों ने घंटों की दीर्घ मौन की चादर जैसे ओढ़ ली। गुरु-शिष्य की ऐसी असीम खामोशी चुभने वाली थी। यद्यपि आमने-सामने बैठे हुक्का पीते रहे। खामोशी में सुबह होने की प्रतीक्षा मानो कर रहे हों।

अब पौ फट चुकी थी। पक्षियों की चह-चहचहाहट विगत दीर्घ मौन को तोड़ चुकी थी। तभी गुरु ज्ञानदेव ने मार्मिक सुर में कहा, कि गुरुदास यदि मैं तुम्हारा गुरु हूँ तो यह युक्ति सूत्र तुम्हें उपलब्ध करवाऊँगा और तभी तुम्हारे पास आऊँगा और अलविदा कर शिष्य के घर से चल दिए।
गुरु ज्ञानदेव दोपहर बाद तक अपने पैतृक निवास आ गये थे। शिष्य के उस विकट आग्रह से उन पर हृदय विदारक घाव हुआ था, जो हर पल उन्हें खाये सा जा रहा था।

गुरु ज्ञानदेव ने अगले ही पल अपने घर के पीछे खेत में एक गड्ढ़ा कर एक गुफा सी निर्मित की व निर्णय लिया कि आगामी सवा महीने तक इस से बाहर न आयेंगे, व कठोर भक्ति कर परमात्मा से युक्ति प्राप्ति की प्रार्थना सहृदय करेंगे। गुरु ज्ञानदेव ने अपनी पत्नी को सुबह 4 बजे 01 लीटर दूध बर्तन में गुफा के मुख पर रखने का निर्देश दे दिया था।

गुरु ज्ञानदेव अपनी इस भक्ति योग में मगन रहे। समय व्यतीत होता गया। आज सवा महीना व्यतीत हो गया। बताते हैं कि इस अवधि में सूरज के उजाले से महरुम गुरु ज्ञानदेव ने सूरज को बाहर आते ही निहारा तो एक नेत्र में रोशनी लग गई। इस भक्ति खंड के पूर्ण होते ही पूरे गाँव के लिए भंडारे का आयोजन गुरु ज्ञानदेव ने किया व अपने हाथों से सभी को खिलवाया।

अभी दो दिन ही व्यतीत हुए थे कि एक सन्यासी संत श्री भगवान देव ने उनके द्वार पर आहट दी। गुरु ज्ञानदेव ने उन्हें उचित आसन पर बिठाया, आव-भगत की, सत्कार किया। श्री भगवान देव ने बताया कि इस पूरे क्षेत्र में ज्ञानदेव तुम्हारी प्रसिद्धि बहुत है। भगवान देव ने बताया कि आगामी कुछ दिन वह ज्ञानदेव के पास ही रुकेंगे।

ज्ञानदेव के घर में असीम प्रसन्नता का वातावरण हो गया। सुबह-शाम ज्ञान गोष्ठी व पूजा अर्चना होती। भगवान देव के आदेशवत दिन में दोनों खेती-बाड़ी हेतु खेतों में कार्य करेंगे।

पहले दिन ही खेतों से लौटने के बाद खाने के उपरान्त वार्तालाप में गुरु ज्ञानदेव परम् संत भगवान देव से प्रभूलीन युक्ति सूत्र के ज्ञान की हाथ जोड़ याचना की, साथ ही अपने परम् शिष्य गुरुदास के अभी हाल के परिवेश में की याचना से स्वयं दुखी व खिन्न मनःस्थिति की वार्ता प्रस्तुत कर दी। भगवान देव बोले ऐ ज्ञानदेव तुम इतने प्रसिद्ध भक्त हो पर इस युक्ति सूत्र को नहीं जानते ?

कोई बात नहीं, तुम अपने शिष्य गुरुदास को यहाँ ही बुला लो। यह सुनते ही गुरु ज्ञानदेव का मुख खिल गया। झुक कर धन्यवाद स्वरुप श्री भगवान दास के चरणों को प्रणाम किया।

भगवान देव व ज्ञानदेव आज खेतों में व्यस्त हैं। गुरुदास को खत लिख आने का आग्रह दो दिवस पूर्व किया जा चुका था। दोपहर के समय खेतों के समीप के राह पर गुरु ज्ञानदेव ने गुरुदास को आता देख पहचान लिया व आवाज लगा दी। समीप आते ही उसने प्रथम भगवानदास जी के श्री चरणों में प्रणाम हेतु संकेत किया। भगवान दास ने मौन व सहज रुप से नेत्र बंद कर हाथ गुरुदास के मस्तक पर आशीष स्वरुप रखे रखा।

गुरु ज्ञानदेव ने, अपने शिष्य, गुरु दास से कहा कि गुरु माता को दोपहर के भोजन में कुछ मीठा बनाने का संदेश दें व वो दोनों यथाशीघ्र सामान इकट्ठा कर बैलगाड़ी से घर आ रहे हैं। बैलगाड़ी पर घर लौटते समय भगवान देव ने कहा, ज्ञान देव इस युक्ति सूत्र को पाने की स्थिति अभी आपकी नहीं है। निश्चय ही तुम्हारा शिष्य गुरुदास इस का सही अधिकारी है, इससे मैं उसे परिचित करवाऊँगा। श्री ज्ञानदेव ने कहा आभार महात्मा व चरणों को भी छुआ।

सायं काल अपने कक्ष में पूजा के समय, श्री भगवान देव ने गुरुदास को अपने समीप बिठाया, कुछ वार्तालाप शिक्षा स्वरुप हुई व प्रभुलीन युक्ति सूत्र, शिष्य गुरुदास को साझा करते हुए आशीष दिया।

दूसरे कक्ष में अकेले बैठे गुरु ज्ञानदेव, आज अति भाव विभोर थे, कि शिष्य को देय वचन की पूर्ति में शिल्पी न सही, सारथी तो निश्चय प्रभु कृपा से बने हैं।

आध्यात्म की इस सत्य लघु कथा के कुछ रहस्य स्वयं ही खुलते व बंद हो कर, भाव पूर्ण जिज्ञासा जगाते जरुर हैं।

- गुरुदास का शरद रात्रि में अपने गुरु ज्ञान देव को देय वचन के उपलब्ध न करवा पाने का उलाहना देना, क्या अकस्मात था ?
- गुरु ज्ञान देव का सवा महीने अज्ञातवास (गुफा में) में कठोर भक्ति करना भी एक सीढ़ी था ?
- गुरु भगवान देव का अचानक गुरु ज्ञान देव के घर में प्रकट होना, आध्यात्म की परम स्थिति के बावजूद, प्यार व भक्ति योग में गुरु ज्ञान देव के खेतों में काम करना !
- गुरु भगवान देव का आह्वान सहज भाव से की केवल शिष्य गुरुदास इस परम ज्ञान के उपयुक्त पात्र हैं।

हिन्दी किस्सा-गोई

समता खानचंदानी
(क.हि.अ.)

सम्प्रेषण की इच्छा अपनी उत्कंठा पर पहुंची होगी... मस्तिष्क की कोशिकाओं ने कैसे भाव-भंगिमाओं को ध्वनि आकार दिया होगा... क्या पीड़ा पर्वत बनी होंगी .. या मन मयूर बन थिरक उठा होगा ... या शायद कुछ गूढ़ उजागर करना अवश्यंभावी हो गया होगा... कुछ तो हुआ होगा जो ध्वनियों ने नए चमत्कार रचते हुए मूल शब्दों की रचना की होगी। डार्विनवाद की उंगली पकड़ के कितने भी पीछे चले जाओ, भाषा तत्व की खोज के सूत्र लुका-छुपी ही करते है। हाँ.. यहाँ अपनी अज्ञानता को छिपाना मुझे शर्मिंदा नहीं करता । व्योम के छोर को पकड़ना है जनाब...

पता है लैटिन, हिब्रू, इजिप्शियन, चायनीस से भी ज्यादा प्राचीन है तमिल और संस्कृत ... तीन हजार वर्ष पुरातन...शोध के अनुसार यदि पश्चिम की वैज्ञानिक शब्दावली का भाषा-विज्ञान के आधार पर अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत के मूल शब्दों से ही हुई है। महर्षि पाणिनी ने संसार का पहला फॉर्मल व्याकरण सिस्टम बनाया था ..ना... यहाँ आप व्याकरण को हल्के में मत लीजिएगा... हम उस व्याकरण की बात कर रहे हैं जो 500 ईसा पूर्व की रचना है और जिसमें नए शब्दांशों को सिंटेन्टीक्स श्रेणियों में बांटने के लिए जिन सहायक प्रतीकों का प्रयोग किया गया वही आज की कंप्यूटर कोडिंग लैंग्वेज है। अच्छा 500... या शायद 700.... या उससे भी पहले ... पाणिनी कब आए इस पर भी मतभेद है...परन्तु निःसंदेह उनके द्वारा रचित धातु शास्त्र और अष्टाध्यायी की विवेचना करते-करते विश्व के तमाम बड़े भाषा वैज्ञानिक अपने आविष्कार पा गए । नामों में बताऊ तो शायद आप ने सुना हो फर्नांडिस डी सॉसर, लियोनार्डो ब्लूमफील्ड, रोमन जैकब्सन या फ्रिट्स स्टाल... अगर नहीं सुना....तो गूगल कीजिएगा और फिर खोजिएगा लियोनार्डो ब्लूमफील्ड की किताब 'ऑन सम रूल्स ऑफ पाणिनी'। बातों-बातों में ये भी बताती हूं कि महर्षि पाणिनी के व्याकरण ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' में आठ अध्याय है जिनमें प्रत्येक में चार पद और कुल चार हजार सूत्र हैं और ये भी, कि इस रचना को मानव मस्तिष्क की सर्वोत्कृष्ट रचना माना जाता है।

संस्कृत का हाथ थामे कई बोलियों और भाषाओं को अपने में घोलते हुए खड़ी बोली हिंदी की यात्रा भी लम्बी रही, जो आज भी अनवरत जारी है । जहां संस्कृत हृदय को गर्व से भर देती है, हिंदी माधुर्य... प्रेम...वात्सल्य से .... उसने जटिलताओं को ढीला करते हुए सहज होना सिखाया। आज भी रुठती नहीं हिंदी जब कुछ नया कहने की कोशिश की जाती है.. यही तो स्वैग है... हिंदी का!! देश-काल-परिस्थिति के नियम ने हिन्दी को नूतन अलंकारों से सदा पुष्पित-पल्लवित किया है। आप ही बताइए जब पूरे देश में सौन्दर्यीकरण की मुहिम चरम पर है.. राजभाषा कैसे छूटी रह जाए ? और वो भी तब जब तकनीकी-क्रांति का संक्रमण काल चल रहा हो ।

आधुनिकता को आज टेक्नो-फ्रेंडली होने के संदर्भ में देखा जाता है, है ना.... और यही तकनीक आज दुनिया के हर पहलु को प्रभावित कर रही है.. मन को... मस्तिष्क को... सोच को.. जीवन के ढंग को। आप गुरेज नहीं कर सकते कि बोलने-बतियाने से, अपनी जिज्ञासाओं की खोज में सवाल करने से, सम्प्रेषण से विकास की मंथर गति को रफ्तार मिली है। हमारे विचार टेक्नोलॉजी के पंखों पर लम्बी यात्रा करते है और आज हमें अभिव्यक्ति के लिए शब्दों की मारामारी नहीं करनी पड़ती। व्याकरणाचार्य पतंजलि ने कहा था 'सच्चा लेखक कभी भाषा-शास्त्रियों के पास जा कर ये नहीं कहता कि पहले मुझे शब्द दो, तब मैं पुस्तक लिखूंगा' शब्द तो लेखन में सहज समाहित हो जाते है । हिंदी की समृद्धि का मैयार ये है कि वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के अलावा अब शब्दों की संख्या 20,000 से बढ़ कर 1.5 लाख हो गई है। हमारे पास कुछ ऐसे ई-प्लेटफार्म भी उपलब्ध है जिससे हिंदी भाषी सहजता से हिंदी में काम कर सकते है । तो चलिए कुछ उन तकनीकों का जिक्र किया जाए जिसने हिन्दी और भारतीय भाषाओं को ई-प्लेटफोर्म पर न सिर्फ पहचान दिलाई है बल्कि आम जनमानस में हिन्दी को फैशनेबल भी बनाया है ।

सबसे पहले बात करूंगी 'डाटामेल (Datamail) की। डिजिटल इंडिया अभियान के तहत भारतीय कंपनी डेटा एक्सजेन टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड ने डाटामेल एप्लीकेशन बनाई है जो दुनिया का पहला ऐसा ऐप है जो आपको मुफ्त में भाषाई ई-मेल की आजादी देता है यानि आप हिंदी या किसी भी भारतीय भाषा में अपना ई-मेल आईडी बना सकते है। इस ऐप को एंड्राइड या आईओएस के जरिये प्लेस्टोर से डाउनलोड कर सकते है और किसी भी.. किसी भी वेब ब्राउजर जैसे क्रोम, फायरफॉक्स, या इन्टरनेट एक्सप्लोरर पर उपयोग कर सकते है । केवल अंग्रेजी की अनिवार्यता के कारण तकनीक का प्रयोग न कर पाने वाले लोगों के लिए ये किसी डिजिटल उपहार जैसा है न... यह अंग्रेजी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, मराठी, कन्नड़,तमिल, तेलुगु, मलयालम, पंजाबी, बंगाली गुजराती और उर्दू में भी मेल लिखने, पढ़ने और संवाद कायम करने की आजादी देता है ।

अब बात करते हैं उस सॉफ्टवेयर की जिसने भाषाई परिधि को भेदने का काम किया। माइक्रोसॉफ्ट वर्ष 2000 से भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करने वाले सॉफ्टवेयर उपलब्ध करा रहा है। इसने भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटरिंग को गति देने के लिए 1998 में भाषा प्रोजेक्ट पर कार्य प्रारंभ किया था और आज इसके ऑपरेटिंग सिस्टम, सॉफ्टवेयर व एप्लीकेशन हमें तकनीक से अपनी भाषा में जोड़ने में अहम् भमिका निभा रहे है, जो लगभग 12 भारतीय भाषाओं में टेक्स्ट इनपुट को सपोर्ट करते हैं ।

विंडोज 10 भारतीय भाषाओं में काम करने के मामले में सबसे लोकप्रिय ऑपरेटिंग सिस्टम है । इसमें हम न सिर्फ आसानी से टेक्स्ट इनपुट कर सकते हैं बल्कि इसे अपने पसंद की भाषा में परिवर्तित भी कर सकते है। कार्यालयीन स्तर पर काम करने के लिए सबसे सुविधाजनक प्लेटफोर्म है 'ऑफिस 360'। यह मूल भाषा में कंटेंट बनाने देता है जिसमें हिंदी की बारहखड़ी का पूरा उपयोग किया गया है। साथ ही ऑटो करेक्ट फीचर से आप अपनी गलती भी सुधार सकते हैं और परेशानी आने पर ऑफिस असिस्टेंट फीचर का भी उपयोग कर सकते है।

माइक्रोसॉफ्ट ने 'लैंग्वेज असेसरिज पैक' ऐप भी लांच किया है जो विंडोस और ऑफिस ऑपरेटिंग सिस्टम में भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करता है। इस लैंग्वेज असेसरिज पैक में लगभग 6 सौ हजार शब्दों के लिए अनुवाद कार्य भी होता है और यह न केवल यूजर इंटरफेस को मनचाही भाषा में परिवर्तित करता है बल्कि क्षेत्रीय भाषा में इंस्ट्रक्शन और डायलॉग बॉक्स भी देता है।

सर्च इंजन की बात करे तो 'बिंग (Bing) सर्च टूल नौ भारतीय भाषाओं में आपको जानकारी खोज देगा। यह डेस्कटॉप के साथ-साथ मोबाइल पर भी उपलब्ध है और अनुवाद सुविधा भी देता है। टाइपिंग की बात करें तो 'स्विफ्ट की' एंड्राइड व आईओएस यूजर को की-बोर्ड उपलब्ध करता है जो कम से कम 24 भारतीय भाषाओं में साथ ही मारवाड़ी, बोडो, संथाली सहित कई उप-भाषाओं में टेक्स्ट इनपुट की अनुमति देता है । ये ऐप लेखन की दृष्टि से बड़ा कारगर है क्योंकि यह यूजर को मिश्रित भाषाओं में लिखने देता है। लेखन के लिए 'स्वे एप' भी काफी उपयोगी है । यह नए विचारों, कहानियों, ब्लॉग्स या रिपोर्ट को मल्टी-मीडिया कंटेंट की मदद से क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयोग करने देता है। यह फोटोज, वीडियोज, दूसरों की टिप्पणियों को जोड़ने समेत आपके लेख के ले-आउट को भी तैयार कर देगा।

सबसे ज्यादा प्रयोग में आने वाले ट्रांसलेटर एप का जिक्र किए बिना मैं कैसे रह सकती हूँ। गूगल ट्रांसलेट की मदद से हम अंग्रेजी सहित 103 भाषाओं का अनुवाद कर सकते हैं इतना ही नहीं ऑफलाइन भी करीब 60 भाषाओं का अनुवाद किया जा सकता है यानि 'ते आमो' समझ न आए तो ट्रांसलेट कर लीजिये और खुल के कहिये ना कि हाँ हिंदी से प्यार है।

टेक्नोलॉजी का सबसे बड़ा जादू यही है कि हम चुप रह कर भी पूछ सकते हैं..झिझकते हुए भी बता सकते हैं और जब दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी की बात हो, जिसका सूत्र ही सर्व समावेश के माध्यम से आवर्धन-संवर्धन है, तो टेक्नोलॉजी ने हिंदी को और भी आधुनिक बनाया है। आज जब हम G-20 की मेजबानी कर रहे हैं और सारी दुनिया को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ा रहे हैं.. कैसा हो की ये पाठ अपनी भाषा में समझाया जाए... अब तक हम अंग्रेजी का अनुवाद करते रहे.. अब दूसरे हिंदी को ट्रांसलेट करें ... अच्छा खयाल है न!!

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य को
सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है

-डॉ. राजेंद्रप्रसाद

दूसरों से प्रेम करें व खुद से भी

सोम नाथ सोनी,
सहायक पर्यवेक्षक

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन पथ, कार्यक्षेत्र में सफलता के सपने संजोता है। पर सबके सारे सपने सच में नही बदलते। अथक परिश्रम के पश्चात् भी यदि सफलता न मिले तो निराश-हताश होना स्वाभाविक है। निराशा का गहरा कोहरा व्यक्ति के मनोबल और विश्वास को कमजोर बना देता है। वह हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है। ऐसी स्थिति से उबरने के लिए जेनकाऊल ने कहा 'स्मरण रखो, आने वाला दिन आज की अपेक्षा अधिक उल्लासपूर्ण होगा। दिन के बाद रात आती है तो रात के बाद उजली सुबह भी जरूर आएगी। उसके पूरे-पूरे उपयोग की तैयारी करो। इसका अर्थ है कि आशा और विश्वास की दीवार को कभी मत दरकने दो। यह आशावादी दृष्टिकोण सफलता का पहला सोपान है। व्यक्तित्व का शक्तिशाली घटक है। निराशा एवं अनिश्चितता के दौर में हम ऐसी सभी चीजों से दूर भागने लगते हैं जिनसे हमें असुविधा होती है। हम समय ऐसे कामों में बिताने लगते हैं, जो हमारे लिए बेहतर विकल्प नहीं होते। अपनी बेचैनियों को धैर्य से जीते हुऐ सही दिशा में चलने के बजाय हम आसान रास्तों की और दौड़ने लगते हैं। कहते हैं कि डर कर फैसले करने के बजाय सही राह की प्रतीक्षा करना ही सही होता है। जीवन यात्रा में व्यक्ति अनेक खट्टे मीठे अनुभवों से गुजरता है। वह कभी फिसलता भी है, गिरता भी है, गलतियां भी करता है किन्तु हर चूक उसे ऐसे सावधान करती है, हर ठोकर ठीक चलने का सबक सिखाती है, हर असफलता सफलता के द्वार खोलती है। इस प्रकार वह प्रत्येक घटना से बोध पाठ पढ़ता है और परिपक्वता के साथ-साथ अनुभव प्रवीण भी बनता जाता है। उन अनुभवों से प्रेरणा ले कर जो निरन्तर आगे बढ़ते रहते हैं, वे अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्र पहचान बना लेते हैं और दूसरों के लिऐ भी प्रेरणा स्त्रोत बन जाते हैं। लेखक व प्रोफेसर मॉरी शेन वाटर्ज ने अपनी किताब 'न्यूसडेज विद मॉरी' में लिखा है अपने आसपास मैं रोज सैंकड़ों लोगों को देखता हूँ। इनमें से कई हैं, जो सफल हैं, व्यस्त हैं, पर इतने थके हुऐ दिखते हैं जैसे अधमरे हों। मैं मानता हूँ कि वे उस रास्ते पर नहीं चल रहे जिन पर उन्हें चलना चाहिए। सही रास्ता वो है, जो आपको आशावादी बनाए, संतोष दे, इन सबके लिए आपको मुस्कुराने की वजह दे। सफल, अमीर या शक्तिशाली बनने की बजाय संवेदनशील एवं करूणाशील बनने की जरूरत है। संवेदनशीलता का अर्थ है दूसरों की कठिनाइयों को जानने-समझने की क्षमता। भौतिक/आर्थिक विकास की दिशा में निरंतर प्रतिस्पर्धात्मक दौड़, औद्योगिक विकास, मोबाइल संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, सोशल मीडिया का बढ़ता वर्चस्व, इन सब कारणों से आज का मनुष्य अधिक आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। करूणा और संवेदनशीलता के स्त्रोत सूख रहे हैं। विश्व की भौगोलिक सीमाऐं सिमट रही हैं, दूरियाँ मिट रही है, किन्तु मनुष्य-मनुष्य के बीच विन्ध्याचल खड़े हो रहे हैं। संवादहीनता बढ़ रही है। संवेदनशीलता समाप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में भावनात्मक रिश्ते ही संबंधों की धरती पर स्नेह-सौहार्द्र की हरियाली उगा सकते हैं।

समय की पुकार

एच. आर. जसपाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी.

जीना है हमें देश की खातिर
मरना भी इस पर है,
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।
बेहतर है जो वतन की खातिर
जी जहां उसी पर लुटा देंगे
रखें जो बुरी नजर देश पर
नामों निशां उसका मिटा देंगे।
प्यार मोहब्बत में जियेंगे
ना तो कोई तकरार है।
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।
नफरत और बदले की भावना
बदलेंगे हम बड़े प्यार से
कट्टरता और घृणा की डगर
मिटा देंगे बड़े एतबार से
नैतिकता की अलख जगाऐंगें
मानवता से जो सरोकार है।
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।
कदम से कदम मिलाकर चलेंगे
तोड़ के धर्म-मजहब की दीवार को
सच्चे दिल से फर्ज निभाएं
भुलाकर आपसी तकरार को
शपथ यही है सबको लेनी
टूटने ना पाए अखण्डता की दीवार है
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।
पाटेंगे हम दिल की दरारें
भाई-चारे की शमां जलाकर
अनेकता में एकता पिरोऐंगे हम
मानवता की एक माला बनाकर
झुकने ना देंगे सर वतन का
धुन मन में यही सवार है
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।

आतंकवाद भ्रष्टाचार की छाया
पड़ने न देंगे हम वतन पर
अमन-चैन की चादर फैलाकर
रक्षा करेंगे हम हर जतन कर
जीवन मूल्यों को अपनाऐंगे
यही समाज की दरकार है।
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।
दुश्मन के नापाक इरादों को
पनपने ना देंगे यह ठान रखी है
सरहद पार की हलचल पर
बंदूकें जवानों ने भी तान रखी है
कुर्बान होंगे देश पर अपने
यही है मोहब्बत, यही करार है
रक्षा वतन की करनी है यारों
यही समय की पुकार है।

प्रकृति का नियमः शून्यता

विनय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

यह सार्वभौमिक सत्य है कि प्रकृति अपना संतुलन निरंतर बनाती रहती है। मानव इस धरा पर अपनी गतिविधियों से प्रकृति के प्रदत्त संसाधनों का दोहन कर उनके स्वरुप में परिवर्तन कर भौतिक विकास के उन्नयन को प्राप्त करने के सतत प्रयास में कार्यरत है। इस मानवीय प्रयत्न में कई बार सीमाओं का उल्लंघन कर मानवजाति के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया जाता है

गत वर्षो में हम हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के साक्षी बने है और जो लोग इन क्षेत्रों में जीवन यापन कर रहे हैं उन्होंने यह महसूस भी किया होगा कि मौसम की समयावधि व दीर्घता में अमूल चूल विभिन्नता आ चुकी है।

मनुष्य ने प्रकृति में परिवर्तन कर जब भी इसके नियम की अवमानना की है परिणाम-स्वरुप इसके संतुलन की घटनाओ का प्रत्यक्षदर्शी भी बना है।

प्रकृति नियम मात्र भौतिक रूप से ही नहीं अपितु मानसिक रूप में भी देखा जा सकता उदाहरण के तौर पर एक शिशु का मस्तिष्क जन्म से शून्य होता है, वह अपने परिवेश से अनेक गतिविधियों का अवलोकन करता और उनका अनुसरण भी समय के साथ उसके मन मष्तिष्क में कई बातों का सम्प्रेषण किया जाता है जिनमे कुछ उसके चेतन मन में व अन्य अवचेतन की स्थिति में निहित रहती है। ये संप्रेषित बातें रासायनिक तत्वों के रूप में उसके काया में संजोयी जाती है जो कि परिस्थितियों के अनुसार प्रतिक्रिया स्वरुप देखी जा सकती है। जब तक यह प्रतिक्रिया नहीं तब तक मानव शरीर में रासायनिक लोचा चलता रहता है और मस्तिष्क इस असंतुलन की स्थिति से उबरने के लिए संतुलन की खोज में रहता है और उसकी प्राप्ति के साथ ही शून्यता का भी साक्षी होता है।

सोलहवीं सदी की बात है कुल्लू के राजा एक बार मणिकरन की यात्रा के समय इस बात से अवगत होने पर कि पार्वती नदी के तट पर उनकी प्रजा में से किसी के पास बेशकीमती मोती है और उसको पाने की अभिलाषा व्यक्त की जिसकी पूर्ति हेतु उसके सिपाही गए किन्तु दुर्घटनावश वह नागरिक सपरिवार इस लोक को त्याग कर चले गए। इस दुर्घटना का बोध होने पर राजा को आत्मग्लानि हुई इसके उपरांत राजा ने पश्चाताप करने का उपाय पूछा और एक सिद्ध महात्मा ने बताया कि अयोध्या से रघुनाथ जी की मूर्ति ला कर स्थापित की जाये। इस प्रयोजन के लिए राजा ने

अयोध्या से रघुनाथ जी की मूर्ति स्थापित कराई और उनके सेवक के रूप में राज धर्म के कार्यो का निर्वहन किया। राजा की मन स्थिति ने संतुलन की खोज की और उसकी प्राप्ति के साथ शून्य के नियम को पूर्ण किया। उस समय से कुल्लू का दशहरा मनाये जाने की परंपरा आज भी प्रचलित है जिसे देखने विश्व के कोने कोने से लोग आते हैं और धर्म व मर्यादा का सन्देश आत्मसात करते हैं।

खल मानुष अपनी प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए प्रकृति के बांधने की उद्दण्डता कर देता है इसी क्रम में जल के धारा प्रवाह में भी अवरोध आ रहे है जिसकी परिणति के हम बीते कुछ वर्षो में द्रष्टा रहे हैं। इस सन्दर्भ में दिनकर जी की एक कविता की पंक्तिया विषयवस्तु का व्याख्यान करती है कि

बांधने मुझे तू आया है, जंजीर बड़ी क्या लाया है
यदि मुझे बांधने चाहे मन, पहले तो बांध अनंत गगन
सूने को साध न सकता है, वह मुझे बांध कब सकता है

मनुष्य का यह प्रयास कदापि नहीं होना चाहिए जिसके द्वारा वह प्रकृति को बांध रहा है। यदि मानव यह प्रयास करता भी है तो प्रकृति की ओर से संकेत दिए जाते रहते हैं और समझदारी इसी में है कि समय रहते समस्या का उपाय किया जाये। प्रकृति का स्वभाव भी भगवान श्री राम के जैसा ही है जैसे एक प्रसंग में जब सौ योजन समुद्र पार करना था :

तीन दिवस तक पंथ मांगते रघुपति सिंधु किनारे
बैठे पढ़ते रहे छंद अनुनय के प्यारे प्यारे
उत्तर में जब एक नाद भी उठा नहीं सागर से
उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से
सच पूछो तो शर में ही बसती है दीप्त विनय की

हिमालय पर्वत श्रृंखला विश्व की नवीनतम पर्वत श्रृंखला है और भूगर्भीय गतिविधियों के कारणवश इसका निरंतर उठान हो रहा है जोकि इसके पारिस्थितिकी की तंत्र को संवेदनशील बना देते हैं। यह पर्वत श्रृंखला भूकंप का अति संवेदनशील क्षेत्र भी है। अतः इस क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों को सीमित कर हम होने वाले नुकसान को कम कर सकते हैं अन्यथा यह बात यर्थाथ है :

खल को विनय समझ न आयी
कदाचित
भय बिन प्रीति न होए गोसाई
जैसी बाते ही चरितार्थ होंगी। अंततः
कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती
लहरों से डरकर नैय्या पार नहीं होती
बोलो सिया वर राम चंद्र की जय।

आऊँगी

श्रुति
कनिष्ठ अनुवादक

लावण्या नाम कैसा रहेगा ? वाह ! बहुत अच्छा है। रजत, तुम्हें दिख रहा है ? क्या ? उसकी आँखें। जैसे शंख हों। और कितनी गहरी और प्रश्नसूचक हैं। कुछ पूछ रहीं हैं। तुम माँ हो, इसलिए अपनी बेटी को इतना समझ पा रही हो। मैं तो उसकी नाक देख रहा हूँ जो बिल्कुल चपटी है तुम्हारी तरह। मजाक मत करो। ठीक है, नहीं करुँगा। लेकिन रमा उसकी चपटी नाक की सुंदरता तुमने नहीं देखी। जब वह थोड़ी सी बड़ी होगी और अपने नाक पोंछेगी या रगड़ेगी कितनी मासूम लगेगी। और उसकी छोटी-छोटी उंगलियाँ मेरे लिए बहुत मायने रखती है। क्योंकि इन्हीं को पकड़कर मैं उसे चलना सिखाऊँगा। थोड़ी और बड़ी हो जाएगी तो उसे जीना सिखाऊँगा। फिर उसे संस्कार बताऊँगा। और एक समय आएगा जब मैं उसकी उंगलियों को धीरे से छोड़ूँगा ताकि वो मेरी उँगलियों के साथ के बिना भी जीना सीखे।

रुको, अभी मत छोड़ना। क्या हुआ, मैं देख रहा हूँ तुम कहीं खोई हो ? अभी मत छोड़ना रजत। पहले मुझे उसकी आँखों को पढ़ने दो। रमा, मैं इंतजार कर रहा हूँ, तुमने आँखें पढ़ ली उसकी ? अरे! तुम रो क्यों रही हो ? रजत, मैंने पढ़ ली। क्या पढ़ा ? उसके सवाल, उसकी बेचैनी ? वो कुछ पूछ रही है। क्या पूछ रही है ? तुम भी ध्यान से सुनो, सुनाई देगा। माँ, मेरा इंतजार कर रही हो ? मैं भी आना चाहती हूँ माँ, लेकिन...क्या तुम मुझे सुरक्षित रख पाओगी ? क्या मुझे सुकून और इज्जत की जिंदगी दे सकोगी ? क्या मुझे इस समाज से बचा पाओगी ? मैं घर से निकलूँगी तो वापस आ पाऊँगी ? पापा ने तो मेरी उँगली पकड़ कर सब सिखला दिया लेकिन उन लोगों को कौन समझाएगा माँ ? मुझे मसलने से पहले एक बार भी नहीं सोचेंगे कि पापा ने और तुमने मुझे इतने नाजों से पाला है। अगर बच भी गई तो क्या पता जिसके घर जाऊँ वही न रख पाए ?

रजत, ये सही कह रही है। मैं क्यों, किस मुँह से आने को कहूँ इसे ? मैं इसे सुरक्षित वातावरण नहीं दे पाऊँगी। मैं असमर्थ हूँ। रजत, हमारा समाज इसे बेरहमी से कुचल देगा। या वो हाल कर देगा कि खुद मर जाएगी। नहीं, नहीं तू मत आ। तेरे बिना रहने का दुख तुझे बर्बाद होते देखने से कम है। रो मत माँ।

लोग बेटियों को कोख में मार देते हैं, तब दुख होता था कि हमारा हक छिनने का हक किसने दिया ऐसे लोगों को। लेकिन माँ अब तो बेटियाँ ही नहीं आना चाहती। कोख में मरने वाली बेटियाँ धन्यवाद देती हैं। पर मैं आना चाहती हूँ। तुम्हारे पास। पापा की उँगलियां पकड़ना चाहती हूँ। अपने भइया के साथ खेलना चाहती हूँ। उसे बुरी संगति से बचाना, बहुत बड़ा इंसान बनाना। मैं आऊँगी, उस दिन – जब तुम मुझे सुरक्षित समाज दोगी, सम्मान दोगी, हर किसी का स्वीकार्य भाव दोगी, शुद्ध और उच्च आचरण वाले लोग दोगी, भयमुक्त स्वतंत्रता दोगी। लेकिन तब तक मत बुलाना। देखो ना मैं यहाँ कितनी खुश हूँ। तुम लोगों की कमी हमेशा रहेगी।

रजत, तुमने हँसी सुनी ? तुम सुन रहे हो ? मेरी बेटी को ? हाँ, हाँ मैं सुन रहा हूँ। ये अट्टहास है, उन लड़कियों पर जो इस दुनिया में आ चुकी हैं। जो खुद को महफूज समझ रही हैं अपने पिता की उँगलियों के साथ, माँ की गोद में। भाई के स्नेह को अपनी ताकत समझती है। बेचारी, नहीं जानती कि इस कलयुग में शायद सब कमजोर हो चुके हैं। भय है उसकी माँ, उसके भाई, और पिता के सीने में। वो मासूम कुछ नहीं समझती। और मैं कितना मजबूर हूँ रमा कि नहीं ला पाया अपनी बेटी को। नहीं कह पाया कि 'आओ'। देखो मेरी उँगलियां काँप रही हैं, उसे सहारा नहीं दे पायेंगी। उसे जाने को कह दो, रमा। मेरी बेटी को हम कब बुलाएँगे, रजत ? शायद कभी नहीं।

रु-ब-रु

दुनिया में कौन किसका कितना है
ये हिसाब लगाने में पूरी जिंदगी बीत जाती है
जनाब....
पहले आप अपने खुद के कितने हैं
इसका तो हिसाब लगा लीजिए.....

दूसरों की शिकायतें करने को
बहुत समय बाकी है
पहले खुद से खुद के
शिकवे तो मिटा लीजिए....

दूसरों के सहारे की उम्मीद करने वाले
पहले खुद को खुद का
सहारा तो बना लीजिए...

किस्मत के भरोसे बैठे हैं सब
पहले किस्मत की लकीरों से
बाहर आकर
मेहनत तो करके देखिए....

खुदा क्या है, क्या है भगवान
सब शक्ति के हैं एक ही नाम
पूरी दुनिया को
मजहब से अलग करके तो देखिए.....

जिंदगी की तमाम मुश्किलें
आसानी से हल हो जाऐंगी
पहले खुद की रुह से
खुद का रिश्ता तो जोड़कर देखिए.....

शालू
कनिष्ठ अनुवादक

उम्मीद

मन के कहीं गहरे से
आती है आवाज...
बस कर अब
इतना सहना
गम में इतना डूब जाना.....
करता है बर्बाद ही
कचोट रहा है मन...
क्यूँ है तू इतनी जिद में
छोड़ उसे जो बीत गया.....
आगे बढ....
आगे भी है जिंदगी बाकी
भीतर है अंधेरा
इतना घना...
बाहर की रोशनी से
दूर हो न पाएगा....
भीतर ही किसी कोने से
कोई रोशनी आएगी....
इस जिद्दी मन को
फिर से हँसना सिखाएगी....
इस काले घने अंधेरे को
जिसमें है सिर्फ तन्हाईयाँ
टूटी उम्मीदें
इन सबको दूर कर जाएगी....

"नारी शक्ति"

"नारी गौरव है सम्मान है,
आदि शक्ति का दूजा नाम है,
नारी के द्वारा रचा ये विधान है,
हे नारी शक्ति तुझे शत्-शत् प्रणाम है।"

सोनिया शर्मा, एम.टी.एस.

प्राचीन युग से समाज में नारी का प्रमुख स्थान रहा है। पौराणिक ग्रन्थों में नारी को पूजनीय एवं देवी तुल्य माना गया है। हमारी धारणा यही रही है कि जहाँ पर समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, वहीं पर देवता निवास करते हैं। कोई भी परिवार, समाज, राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थों में प्रगति की ओर नहीं जा सकता जब तक भेद-भाव निरादर का त्याग नहीं करता है।

आज नारी अधिक से अधिक शिक्षित और उन्नति की ओर अग्रसर है। हमारे भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी महान वीरांगनाओं का सराहनीय योगदान रहा है। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष क्षेत्र में नारी का नाम बहुत ऊँचा कर हमारे भारतीय समाज का नाम रौशन किया है।

नारी शक्तिकरण की नीति का उद्देश्य महिलाओं की उन्नति, विकास तथा सशक्तिकरण को मूर्त रुप देना है। नारियों के लिए एक ऐसा माहौल तैयार हो जिससे वे अपनी क्षमताओं को समझ सकें। सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में महिलाओं द्वारा भागीदारी और निर्णय क्षमता का समान अवसर हो। आज महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ रहा है। हमें भी हर तरह से नारी शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। वैसे तो सरकार द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं जिससे आज महिला पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में आगे बढ रही है।

नारी पुरुष की भी प्रेरणा स्रोत है, जैसे राधा-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम भगवान जी। कोई भी जगह ऐसी नहीं है जहाँ भारतीय नारी ने अपनी सफलता का झंडा नहीं लहराया हो। भारतीय नारी शिक्षा के क्षेत्र से लेकर हर क्षेत्र में अपनी सफलता का झंडा लहरा रही है। आज हमारे भारतीय समाज में नारी हर क्षेत्र में, चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो, आर्मी में या पायलट, नेवी, पुलिस, वकील हर क्षेत्र में भारतीय समाज का नाम रोशन कर रही है।

जहाँ नारी का सम्मान नहीं होता वहाँ कभी भी देवता का निवास नहीं होता है। वर्तमान में नारी शिक्षा का बहुत अधिक महत्व है। जिस प्रकार जीवन में जीवन जीने के लिए किसी भी व्यक्ति को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी देश को विकसित होना है तो सबसे पहले वहाँ कि महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरुरी है, अगर महिलाएँ शिक्षित होंगी तो वे अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होंगी और हर क्षेत्र में अपनी सफलता से हमारे भारतीय समाज का नाम रोशन करेंगी।

अतः मैं यही कहना चाहती हूँ कि भारतीय नारी हर क्षेत्र में उन्नति के शिखर पर विराजमान है और भारत सरकार भी नारी के विकास के लिए हर संभव कार्य कर रही है।

"जय हिंद, जय भारत"

शुक्र करता चल, शुक्र करता चल

अनुराधा सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भूख और बेबसी से बड़ी, कोई मजबूरी नहीं होती,
नजरों से ओझल होना, कोई खास दूरी नहीं होती।
एक जन के बिछुड़ने से, बिखर जाते हैं कई रिश्ते,
जुदा हुए परिवार-जनों की कमी, कभी पूरी नहीं होती।।

हैरान हूँ मैं, बदलती हुई दुनिया का अंदाज देखकर,
लोग इज्जत भी करते है, तो रुतबा और लिबास देखकर।
हकीकत में जिंदगी, कभी धूप तो कभी छाँव है,
कभी दिल गमों से बेहाल है तो कभी खुशियों से सराबोर है।।

दिल से दिल को राहत ही, एक बड़ी बात है,
जिस का कोई नहीं अपना, उसे अपनों की आस है।
जब कोई पास है अपना, तो फितरत है ऐसी,
उसी से झगड़ते हैं और बिछुड़ने पर उसी को तरसते है।।

जीवन एक संघर्ष है, अनवरत चलता ही रहेगा,
उठ जाग जा मानुष, अभी यह थकने का वक्त नहीं है।
नियम है इस संसार का, जो आया है वो जाएगा,
यही जीवन-चक्र है, जो कभी हंसाएगा तो कभी रुलाएगा।।

पहल कर के तो देख, मुकाम खुद-ब-खुद मिल जाएगा,
विश्वास रख उस खुदा पर, रास्ता भी वो ही बताएगा।
आज उस रास्ते पर चलेगा तो कल मंजिल भी मिलेगी,
कर्म तो कर तू अपना, तेरी मेहनत भी जरूर फलेगी।।

जिन्दगी के इन अनमोल लम्हों को, हँसकर बिता लो,
इस सफर की सूख चुकी उम्मीदों को, फिर से जगा लो।
खाली हाथ तूने जन्म लिया था, खाली हाथ ही तू जाएगा,
फिर काहे को करता तेरा-मेरा, सब यहीं धरा रह जाएगा।।

कर्म, काबिलियत और किस्मत के अनुसार ही तू पाएगा,
जो खो गया है उसपर गम न कर, जो मिला है उसपर सब्र कर।
तकदीर को कोसना छोड़ और ठान ले वक्त के साथ चलना,
बीत चुके अतीत का, ना तू फिक्र और ना ही जिक्र कर।।

हौसले को पंख दे अपने और सपनों को उड़ान,
कर्म करता चल अपना, रखके परमसत्ता पर अडिग विश्वास।
समझ से परे है उसके अस्तित्व, उसके वजूद को परखना,
और जो मिला है व जो मिल रहा है उसका दिल से.....
शुक्र करता चल, उसका शुक्र करता चल !!!!

कुछ खट्टी-मीठी बातें

अंकुर बहल
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

1) सरलता, साधुता, दयालुता, शराफत
ये सब कमज़ोरियाँ हैं इंसान की
बेवजह इंसान को कमजोर बनाती हैं
इनसे विवश होकर शोषित हो जाता है
आगे बढ़ने को इस कलयुगी युग में,
चपलता, चाटुकारिता एक अंदाज है
गिरे-से-गिरे हुए इंसान को भी
बादशाह-ए-हुकूमत बनाता है।

2) दुःख इस बात का नहीं कि
मेरा कोई अपना न हो सका,
दुःख इस बात का है कि
मैंने सबको अपना समझ लिया।

3) सहायता में अगर छिपी है आशा
तो समझ लो आहट दुःख की है
निःस्वार्थ भाव अब नहीं दिखता कहीं
फिर भी दिल में अभिलाषा सुख की है

4) सच मायने रखता है, बेशक ! रखता है
झूठ के भी कहाँ पाँव हुआ करते हैं
ज़ख्म दूसरों को देकर हंसने वाले
चौन की नींद वो भी नहीं सोया करते हैं

5) बड़ी ही बेदर्द रीत है जमाने-जहाँ की
सौ बार बोला गया झूठ, सच हो जाता है
काफिर बुलंदियों की खुशबू लेता है
सच्चा मुँह ताकता रह जाता है।

हिन्दी पखवाड़ा-2022
प्रतियोगिता परिणाम

प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1. वाद विवाद	श्री दयासागर (स.ले.प.अ.)	सुश्री हितिका कोचर (स.ले.प.अ.)	श्री राहुल पुंज (लिपिक)
2. श्रुतलेख	श्रीमती वीणा कश्यप (सहा. पर्य.)	श्री सोहेल अहमद (स.ले.प.अ.)	श्रीमती अमिता वर्मा (स.ले.अ.)
3. अनुवाद	श्री राजेश कुमार शर्मा, स.ले.प.अ.	श्री सुदर्शन शर्मा, स.ले.अ.	श्री नेत्र चौहान, स.ले.अ.
4. टिप्पण-आलेखन	श्री नेत्र चौहान, स.ले.अ.	श्री कुलदीप सिंह, स.ले.प.अ.	श्रीमती उषाकिरण, व.ले.प.अ.
5. कंप्यूटर पर टंकण	श्री भूपेन्द्र सिंह, स्टेनोग्राफर	श्रीमती सत्यवती, सहा.पर्य.	श्रीमती निरुपमा ठाकुर, डी.इ.ओ.
6. निबंध	श्री सोहेल अहमद, स.ले.प.अ.	श्री शैलेश त्रिपाठी, स.ले.प.अ.	श्री रोहित खंडेलवाल, ले.प.
7. आशुभाषण	श्री राहुल पुंज, लिपिक	श्री शैलेश सोनी, स.ले.अ.	श्री रजत प्रजापति, स.ले.प.अ.
8. कविता-पाठ	श्री शैलेश सोनी, स.ले.अ.	श्रीमती हितिका कोचर, स.ले.प.अ.	श्री प्रकाश सिंह, लेखाकार

वर्ष 2022-23 में सेवा निवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (ले. व ह.)

क्रं0सं0	सर्व श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	बलबीर सिंह	पर्यवेक्षक	30.04.2022
2	सुमित्रा पंवर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2022
3	तिलक राज शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2022
4	सुधीर चंद्र जोशी	पर्यवेक्षक	31.05.2022
5	मीरा देवी वर्मा	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
6	अभय शर्मा	पर्यवेक्षक	30.06.2022
7	दुर्गेश नैय्यर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2022
8	नेत्र सिंह चौहान	सहायक लेखा अधिकारी	30.09.2022
9	रमा देवी	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2022
10	तरबीज सिंह	पर्यवेक्षक	30.09.2022
11	प्यारे लाल कौशल	पर्यवेक्षक	31.10.2022
12	हर्तीद्र भास्कर	पर्यवेक्षक	31.10.2022
13	बाल कृष्ण	सहायक लेखा अधिकारी	31.10.2022
14	जैसी राम शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2022
15	सतीश कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2022
16	राजमल चोपड़ा	सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2022
17	हंस राज	पर्यवेक्षक	31.12.2022
18	ओम प्रकाश ठाकुर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2023
19	मनोज कुमार गुप्ता	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023
20	रतन चंद	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2023
21	गोपाल सिंह ठाकुर	पर्यवेक्षक	31.03.2023
22	आशा राम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2023
23	बलवीर सिंह सूरी	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023

वर्ष 2022-23 में सेवानिवृत हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखापरीक्षा)

क्रं0सं0	सर्व श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	सैमुअल मल्होत्रा	सहायक पर्यवेक्षक	30/04/2022
2.	प्रदीप कुमार	कैंटीन सहायक	31/05/2022
3.	सीता राम	निजी सचिव	30/06/2022
4.	सरला संदल	पर्यवेक्षक	30/06/2022
5.	रमेशचंद चौहान	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/12/2022
6.	सुशील कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28/02/2023
7.	धर्मपाल शर्मा	लेखापरीक्षक	28/02/2023
8.	रविन्द्र सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	28/02/2023
9.	राकेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	31/03/2023

इन्डिहीकम्पस/लेप/कोसूसी/पत्रिका/2023-24

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, सेतु, कला कार्यालय कोसूसी
रोपड़ रूपिंगी रोड, कसूर, कोसूसी -882017

सं : वि क /ले प/कोसूसी/पत्रिका/2023-24 दिनांक 22.06.2023

सेवा में
उपनिदेशक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय
हिमाचल प्रदेश , शिमला- 171003

विषय : हिन्दी युग पत्रिका 'हिम प्रभा' के 91-92 में अनुकूलन की पावती

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की युग पत्रिका,"हिम प्रभा" के 91-92 वे अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है सहर्ष धन्यवाद ,पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका में कन्यका जी की कविता – " माँ " में माँ और बेटी के मधुर एवं कोमल संबंधों का निरूपण किया गया है और वह सच को कह देने वाली है और दर्शाती है कि माँ के स्नेह से अनमोल और महत्वपूर्ण इस संसार में कुछ नहीं है। जहां सुनीता देवल जी की कविता "मेरा कसूर" यही होगा कि उनके घर जो उदाहरण करता है तो वहीं अनुराधा सूद जी की लेख) -"नारी की व्यथा" नारी के सम्पूर्ण जीवन पक्ष को दर्शाती है। । श्री. हेमेन्द्र त्रिपाठी की 'नई शिक्षा नीति', श्रीमती शशि कुल्लुवी की 'परीक्षा की तैयारी कैसे करें' एवं श्री कुलदीप सिंह 'पंप का हमारे जीवन में महत्व' आदि लेख पाठकों को जीवन के दृश्यावलीय पहलुओं के बारे में अवगत कराते हैं। पत्रिका की साज सज्जा आकर्षक है एवं इसमें सम्मिल फोटो कार्यालय की गतिविधियों का दर्पण है।

पत्रिका को इस सम्पादक मंडल और भाग में पाठकों के सम्मुख लाने वाले संपादक मंडल एवं इसको अपनी रचनाएं भेजकर समृद्ध करने वाले सभी रचनाकार साधुवाद के पात्र हैं। सभी को हार्दिक बधाई।

Signed by Sreedevi K V
Date: 23-06-2023 13:04:00
Reason: Approved

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
टेलेफ - 0172-2703110, ट्र. फ. - 2702272, 2702072

क्रमांक - हिंदी सह/समीक्षा/2-10/2023-24/188 दिनांक - 17.06.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी ,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा तथा लेखा व हकदारी,
हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171003 ।

विषय - त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'हिमप्रभा' के 91-92वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका हिमप्रभा के 91-92वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के दस्तावेज भी अति सराहनीय हैं।

श्री हरिवंशराय बच्चन की 'हिंदी दिवस मेरी नजरों', सुश्री सरगम की 'मैं कौन हूँ, सुश्री कीर्ति चतुर्वेदी की 'महत्वाकांक्षी को अहंकार से बचाएं' तथा सुश्री सुनीता देवल की 'मेरा कसूर', रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार से पूरी सफल सिद्ध है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

सधन्यवाद

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

इज./ले.प./पत्रिका/2021-22/37

1/30646/2023

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) बिहार
बीरचंद पटेल मार्ग, पटना 800001

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800001.

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार,
हिमाचल प्रदेश, शिमला।

विषय: कार्यालयीन हिन्दी ई-पत्रिका 'हिमप्रभा' के 91-92 संयुक्तांक का प्रतिभेद ।

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'हिमप्रभा' के 91-92 संयुक्तांक के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं शुभकामनाएँ । पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री और पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत सुन्दर है। पत्रिका के आवरण-पृष्ठ पर प्राकृतिक सुन्दरता को बड़े मनमोहक रूप में चित्रित किया गया है । पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएं विभिन्न सभी को अपने में समेटे है । सुश्री समता खानचंदानी की 'प्रकृति', श्री भगवान जी का 'पेड़ की अभिलाषा' तथा सुश्री पूजा का 'कुछ बूँद आगमन' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं पठनीय है।

गद्य विधा में सुश्री समता खानचंदानी की लघु संगोष्ठकथा के जीवनी पर आधारित रचना 'कैसे दूँ विदाई' तथा श्रीमती अनुराधा सूद जी का खलिहानाल आर्टीकल से प्रकाशित पंजाब में बिताए उस समय के अपने निजी अनुभव पर आधारित रचना 'यादों के कुछ खट्टे-मीठे अनुभव' रोचक एवं मनोरंजक है। इसके अलावा श्री एस.के.जुल्का का 'शिमलापुरा' नामक खोज कुतुब्तन शिमलापुरा के बारे में बहुत कुछ कह जाती है। अंत में मिल से पत्रिका परिवार को बधाई एवं आभार ।

सधन्यवाद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी/हिन्दी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./वि-2/ जावक - 50 दिनांक 23.06.2023

प्रति ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिन्दी अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार,(लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

विषय - संयुक्त हिन्दी पत्रिका **"हिमप्रभा" 91-92वें अंक** की पावती बाबत ।

संदर्भ- आपका पत्र दिनांक 09.06.2023 को ई-मेल द्वारा प्राप्त ।

महोदय / महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका **"हिमप्रभा"91-92वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर हिन्दी दिवस कैसे मनाएं, कैसे दूँ विदाई, कुछ मेरा भी दोष, मैं कौन हूँ, नारी की व्यथा, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन दिग्दर्शन ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के सुचारु तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

23/6/23
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी सेल

हिंदी/02

I/305347/2023

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, संजौली जंक्शन, शमलाघाट - 211001
REGIONAL TRAINING INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sanjauli Junction, Shamlaghat – 211001
Phone : 2421394, 2421393, 2634467 Fax : 0552-2423455

सेवा में,
हिंदी अनुभाग
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

विषय:- हिंदी पत्रिका हिमप्रभा का 91-92 अंक ।

संदर्भ:- ईमेल के माध्यम से प्राप्त पत्र दिनांक 09 जून 2023.

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका हिमप्रभा का 91-92 अंक प्राप्त हुआ । इसके लिए धन्यवाद ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ, साज-सज्जा, कवरेज एवं मुद्रण बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं उच्च स्तर की एवं उपयोगी हैं । समस्त रचनाएं एक से बढकर एक हैं । विशेषत: हिंदी दिवस कैसे मनाएं, 'कुछ मेरा भी दोष', 'कैसे दूँ विदाई', 'मैं आता हूं, झुकता नहीं हूं' एवं 'कामयाबी को अहंकार से बचाएं' उत्कृष्टतम रचनाएं हैं । पत्रिका में प्रकाशित अन्य लेख भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं । पत्रिका में प्रस्तुत कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहे हैं ।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की नियमित प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरिष्ठ उपसंचालक अधिकारी

Signed by Kaushlesh Singh
Date: 22-06-2023 16:57:40
Reason: Approved

Admin/HindiCell/SammatiseSambandhit/

I/339892/2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -प्रथम) म.प्र.
ऑडिट भवन,झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रधमलेखा/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति आलेख- दिनांक: 26-07-2023

प्रति,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय - हिंदी पत्रिका "हिम-प्रभा" के 91-92वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिम-प्रभा" के 91-92वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है ।

पत्रिका की साज - सज्जा उत्कृष्ट है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं अति प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च स्तरीय हैं । श्रीमती समता ज्ञानचंदानी द्वारा लिखा लेख "कैसे दूँ विदाई" महान शख्सियत माता मंगेशकर जी को एक भावभीनी श्रद्धांजलि है । सुश्री सोनिया डागी द्वारा लिखित लेख "गुरुकुलहट खिन्दगी का सबसे अनमोल तोहफा" जीवन में गुरुकुलहट का मूल्य दर्शाता है । श्रीमती सुनीता देवी द्वारा रचित कविता "कार्यालय प्रधान महालेखाकार" प्रशंसनीय है । अन्य रचनाओं में श्रीमती अनुराधा सूद का लिखा "आरी की व्यथा", श्री दया सागर द्वारा रहित कविता "मैं झाड़ हूँ, झुकता नहीं हूँ" सुश्री मनिका कश्यप की कविता "मेरे देश के किसान", सुश्री कीर्ति चतुर्वेदी द्वारा लिखा लेख "कामयाबी को अहंकार से बचाएं", श्रीमती सुमित्रा चौहान द्वारा रचित कविता "मेरा वजूद" भाषा-शैली की दृष्टि से रोचक एवं पठनीय है । शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

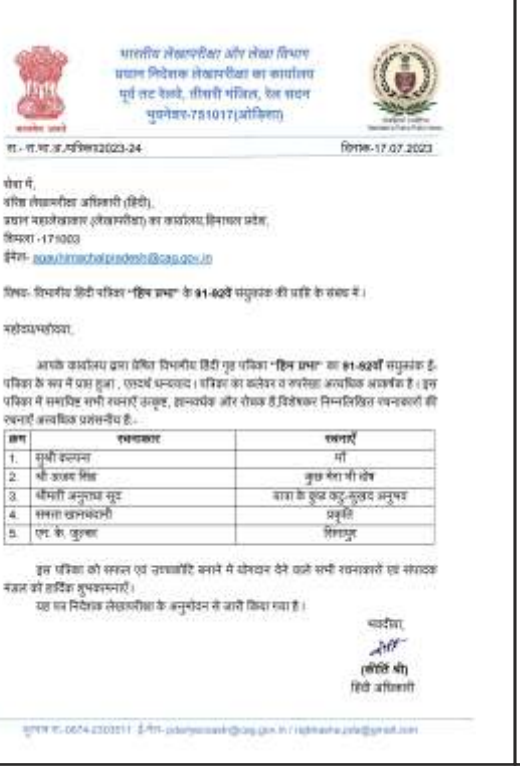

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओडिशा)

स.- प.नि.ल.प./हिंदी/2023-24 दिनांक- 17.07.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, हिमाचल प्रदेश,
शिमला -171003
ईमेल- agsa.himachalpradesh@cag.gov.in

विषय- त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के **91-92वें** संयुक्तांक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका "**हिम प्रभा**" का **91-92वाँ** संयुक्तांक हमें प्राप्त हुआ , एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व सामग्री अत्यधिक आकर्षक है । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं विशेषकर निम्नलिखित रचनाओं की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री कल्पना	माँ
2.	श्री उत्तम सिंह	कुछ मेरा भी दोष
3.	श्रीमती अनुराधा सूद	बाबा के कुछ कटु-मुलायम अनुभव
4.	समता ज्ञानचंदानी	प्रकृति
5.	एन. के. जुल्का	सिलचुर

इस पत्रिका को सफल एवं उपयोगी बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह सम निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,
(सीति पी)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष नं. 0674-2303511 ई-मेल- pdeohyderabad@cag.gov.in / rajbhasha.pdo@gmail.com

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
3, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
3, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/हिमप्रभा

दिनांक: 19.06.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हिमाचल प्रदेश
शिमला - 171003

विषय: संयुक्त हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 91-92वें अंक की रचनाएं

महोदय/महोदया,

[illegible] दिनांक 11.06.2023 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित संयुक्त हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 91-92वें अंक की सौजन्य प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का अवलोकन करने पर यह जानकारी मिली है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं विविध रस से ओत-प्रोत हैं। सुश्री कविता सागर की रचना 'कुछ मेरा भी दोष', सुश्री कविता सागर की रचना 'मुकुलहाट', त्रिलोकी का सबसे अनमोल तोहफा', श्रीमती अनुराधा सूद की रचना 'आरी की व्यथा' तथा सुश्री किरण नवारी की रचना 'प्रकृति' अनुपम है। अन्य सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के प्रकाशन उपलब्ध के लिए बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
[illegible]
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

राष्ट्र भाषा हिन्दी

राष्ट्र निर्माण व विकास की पथ-प्रशस्तिका

1. भाषा के उत्थान में एक भाषा का होना आवश्यक है। इसलिए हिंदी सबकी साझा भाषा है।

– पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार

2. यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो मछली से सीखें जो स्वदेश (पानी) के लिए तड़प-तड़प के जान दे देती है।

– सुभाष चंद्र बोस

3. सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है।

– अमरनाथ झा

4. है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी।
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।

– मैथिलीशरण गुप्त

5. संस्कृत की विरासत हिंदी को तो जन्म से ही मिली है।

– राहुल सांकृत्यायन

हिंदी पखवाड़ा 2022 कार्यक्रम समारोह

फाग मेला, हिमाचल प्रदेश

पराशर झील, हिमाचल प्रदेश

कुल्लू दशहरा, हिमाचल प्रदेश

Printed@ANAMIKA PRINTERS, SHIMLA 9816065605